भाग 1

।। श्री गणेशाय नमः।। ॐ गुं गुरुवे नमः ।। रां रामाय नमः ।। ॐ ह हनुमते नमः ।। भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुर नाम बपु एक इन्के पद वंदन करू नासत विघन अनेक जय श्री सीताराम । जनक सुता जग जननि जानकी ।।अतिसय प्रिय करुनानिधान की ।। ताके जुग पद कमल मनावउॅ । जासु कृपॉ निरमल मति पावउॅ ।। श्री श्री अंनन्त श्री विभूषित श्री राम रत्न दास जी महाराज पटिया बाले बाबा का स्थान करह पटिया बाले बाबा जिला मुरैना मध्य प्रदेश भारत देश के । शिष्य श्री श्री अंनन्त श्री विभूषित श्री रामदास जी महाराज रामायणी जी श्री करह विहारी सरकार के । शिष्य श्री भरतदास जी महाराज का जीवन चरित्र ।। जन्म भूमि ग्राम भम्पुरा तहसील जौरा जिला मुरैना मध्य प्रदेश भारत देश में । दिनांक बैसाख शुक्ल सप्तमी विक्रम सम्वत 2025 को गुर्जर बंष महाना परिवार में । माता श्री बैकुंठी । एवं पिता श्री रोशन सिंह । के पुत्र रुप मे जन्म हुआ नाम रखा भरत सिंह। परिवार में एक चाचा थे पीतम सिंह । एक बडा भाई सीताराम सिंह । एक छोटा भाई राम लखन सिंह चारि बहन । राम बेटी । अंगूरी । देवरती । उर्मिला । घर में 30 बीघा जमीन थी 60 गऊ माता 25 भैंस थी 5 किलो घी माता जी मथानी से मथ कर निकालती थी । भरत सिंह के मामा । सिद्ध स्थल करह पटिया बाले बाबा । के पास सीतापुर ग्राम के । थे इसलिए बचपन से करह धाम के दर्शन होते रहते थे । भरत सिंह का जन्म श्री करह विहारी सरकार के आशीर्वाद से हूआ था । बचपन में माता जी सीताराम राधेश्याम का कीर्तन कराती थी । श्री रामरत्न दास जी महाराज पटिया बाले बाबा का जीवन चरित्र । सुनाती थी भरत सिंह जी बचपन बडे ज़िद्दी थे । जिस बस्तू के लिए मचल जाते तो लेकर ही मानते थे । एक साल बार्षा नहीं भई अकाल पडा था। इसलिए गऊ भैंस चराने । कनार के पास अमोही ग्राम मैं गए थे । बचपन से ही धार्मिक किसा कहानी सुनाने का बडा सौक था । एक दिन शियाई की टेक के ज्ञयासी पंडित । बोले आजि तो बिगरि हूका के कैसा सुनाओ हम सुनिगे । तो सब लोग सो गए भरत सिंह जी रात्री भर धार्मिक किसा एवं कथा सुनाते रहे । सुबह ज्ञयासी पंडित ने कहा भरत सिंह सब सो गए आप अभी तक कैसा सुना रहे है । अमोही ग्राम के पास एक झिन्ना था । सिद्ध बाबा का स्थान था । एक संत भगवान रहते थे । भरत सिंह जी उनके लिए दूध ले जात थे ओर उनके चरण छूते सत्संग सुनते थे । महाराज जी कहते । बडे भाग्य मानुस तनु पावा । सुर दुर्लभ सब ग्रंथ नि गावा ।। वैसे भोग भोजन तो शुगर कुकर भी करते हैं । लेकिन भजन नहीं कर सकते है भजन केबल मनुस सरीर से ही होता है । लोग सोचते हैं अभी तो बचपन है बिर्धा पन मै भजन करेंगे । तो काल का क्या भरोसा कब आजा एगा । इसलिए बचपन से ही भजन करना चाहिए है । प्रत्येक व्यक्ति माता के गर्भ में उलटा टगा रहता है ।

भाग 2

उस समय भगवान से प्रार्थना करता है। है भगवान इस नर्क से बाहेर निकालो। आप का सुआस सुआस पर नाम लूँगा। लेकिन भुमि पर्त भा डाबर पानी जिमि जीवह माया लिपटानी। चौबीस घंटे में 21 हजार 6 सों 6 सुआसा निकलती हैं इसलिए 25 हजार सीताराम नाम का जाप करना चाहिए प्रतेक प्राणी को। भरत सिंह जी ने इस प्रकार का सत्संग सुना तो वैराग्य जाग्रत होगया उसी समय से निसचय करलीया के विवाह नहीं करूंगा साधू बनुगा हर समय सीताराम सीताराम का जाप सुरू होगया। भरत सिंह जी गऊ भैंस चराने के बाद अपने ग्राम भम्पुरा मै आ गए। गांव में स्कूल नहीं था इसलिए भरत सिंह जी 3 किलो मीटर दूर शियाई की टेक के पास देवी पुरा मै पढने जाते थे। 3 किलास तक पढाई की। उसी समय बडे भाई का समय खराब होने के कारण बीमारी लग गई। भरत सिंह की पढाई रुक गई घर में श्री राम चरित मानस थी उस का अध्ययन करते थे भरत सिंह जी 15 साल की उम्र में एक दिन जेष्ठ का महीना था लूचलरही थीं बंगला में। सीताराम सीताराम का जाप करते हुए। दूल्हा दुलहन के श्रृंगार मे भगवान श्री सीताराम जू सरकार की तस्वीर को। एक टक लगा कर दर्शन कर रहे थे। नेत्रों से आसू की धार चल रही थी। उसी समय श्री सीताराम जू सरकार की तस्वीर को साथ में लेकर सीधे जंगल की ओर चलदीए नंगे पेर। भम्पुरा ग्राम से 12 किलो मीटर की दूरी पर एक आमझिर स्थान था भाह पर एक संत भगवान रहते थे। उनके जाकर चरण छूए अपना परिचय बताया ओर भरत सिंह जी महाराज जी की सेवा में रहने लगे महाराज जी की चरण सेवा करते। जंगल से धूना के लिए लकडी लाते बर्तन साफ करते। आश्रम में झाडू लगाते हर समय सीताराम सीताराम का जाप करते थे। इतमे घर बाले घबरा गए कि बिगरि बताए कहा चला गया। सभी रिश्ते दारी मै खोज की लेकिन कहीं पता नहीं चला। इतमे महाराज जी के साथ पाढगढ बजार मै गए थे भाह पर किसी ने देख लिया बापस आश्रम में आए। तो खोजते हुए चाचा आ गए रोने लगे महाराज जी से प्रार्थना कीया के। घर में बडा भाई बीमार हैं सभी परिवार बहुत दुखी है भरत सिंह जी ने। कहा घर चलेंगे लेकिन विवाह नहीं करेंगे। फिर घर आ गए ओर उघारे रहने लगे हर समय सीताराम सीताराम का जाप करते रहते थे एक बार कहाँ के बडी बहन को ससुराल पहुंचा आओ। ओर कहा कपडे पहनलो लेकिन भरत सिंह जी कपडे नहीं पहने उघारे ही बहन को ससुराल पहुंचा ने गए। रिश्ते दारो ने बहुत समझाया लेकिन किसी की नहीं मानी। लौटकर धनाकेपुरा आए परिवार के भाई बाबा के लडके रहते है उन्हें ने बताया कि आज से 15 दिन में आप का विवाह हो जाएगा। भरत सिंह जी के माता पिता ने सोचा कि विवाह करदिया जाए तो साधू नहीं हो पाएगा। भरत सिंह जी ने रास्ते में पहाढ मै से खरी

भाग 3

लिया हल्दी पाउडर मै चूना मिलाकर रोरी एवं श्री बनाकर द्वादश तिलक लगा लीए । ओर अचला लगा लीए । उसी समय नानी खत्म होगई तो माता जी के साथ मामा के गांव गए भाह से करह चले गए करह धाम में श्री राम जी दास पुजारी जी महाराज बहुत गुस्सा हुए के साधू भेस आपने से नहीं बनाया जाता है । गुरु जी धारण करते हैं तब भरत सिंह जी ने कहाँ कृपा करि के आप गुरु मंत्र दै देऊ तब कहा एक साल तक आश्रम में रहकर सेवा कीजिए तब गुरु मंत्र मिलेगा। तब तक मामा जी खोजते हुए आ गए कहाँ पुजारी महाराज से प्रार्थना कीया के बडा भाई बीमार हैं इन्को घर भेज देऊ । भरत सिंह जी ने कहाँ के आप जो सेवा कराएगे सभी करगे लेकिन घर नहीं जाएंगे । तब पुजारी महाराज कहें इस समय आप घर जाइए घर से एक हजार रुपये ले आना फिर आप को श्री करह विहारी सरकार एवं श्री छोटे महाराज जी से गुरु मंत्र दिलबाएगे । तब भरत सिंह जी माता जी के साथ घर के लिए चल दिए रास्ते में भूआ क गांव पडता है छडेह तो । भरत सिंह जी ने कहा आप भूआ के घर चलीए मै मजरा कारस देव का मेला दर्शन करि के आता हूँ । भाग 1

सुबह 10:55

भाग 2 भरत सिंह जी कारस देव के मेला में पहुंच तो अनेक संत भगवान के दर्शन हुए । एक नागा जी महाराज के साथ चलदीए मुरैना से आगे । ग्राम शिवलाल पुरा के पास आसन नदी के किनारे हनुमान जी के स्थान पर श्री नागा महाराज के साथ । एक महीने रहे नागा जी महाराज तांत्रिक थे इसलिए गुरु दीक्षा नहीं लिया । भरत जी की सुरू से श्री सीताराम जू सरकार के दर्शन की इच्छा थी। श्री नागा जी महाराज से । भरत जी को साधू साई टकसार सीखने को मिली साधू समाज में कैसे रहते हैं । फिर भरत जी भासे भी चलदीए साधू समाज में कहाँ बति है पानी पीए छानिके गुरु करे जानिके । मुरैना से बस पकड़ के सबलगढ़ पहुंचे एक दो दिन रुके फिर निठेरा । श्री राम जी दास जी महाराज के दर्शन किये आगे धौरेट बाबा के आश्रम पहुंचे । 15 दिन बाद एक मोटरसाइकिल से ग्वालियर पहुंचे लशकर में किले के बगल में आश्रम हैं पूर्ण बैराठी जी का । 5 दिन के बाद चलदीए बटेश्वर के मेला में पहुंचे बटेश्वर में कई महात्मा पीछे पढे शिष्य बनाने के लिए । बटेश्वर में श्री घोडा बाले बाबा के दर्शन हुए उनके साथ 40 महात्मा की जमाति थी श्री घोडा बाले महाराज जी के साथ उनके आश्रम पारसेन की पहाडीया पहुंचे । तब श्री घोडा बाले महाराज जी ने पंच संसकार कीया एवं श्री राम मंत्र की दिछा दिया नाम रखा श्री भरतदास जी । कुछ दिन निवास कीए फिर भ्रमण करने के लिए श्री चित्रकूट धाम पहुंचे चित्रकूट चारि धाम की यात्रा कीये । फिर श्री घोडा बाले महाराज जी के गुरु आश्रम खिराबली पहुंचे । 3 महीने बाद खिराबली में खोजते हुए चाचा आ गए रोने लगे कहाँ घर होइआईये हम आप क

भाग 4

रोके गे नहीं तब घर आए 15 दिन रुके फिर चलदीए करह पहुंचे महात्मा बोले चलिये । प्रयागराज का कुंभ लगिराह है कुंभ में पहुंचे बडे बडे सिद्ध महापुरुष के दर्शन हुए शियाई स्नान किया त्रिवेणी में कुंभ के बाद । श्री भरत दास जी कासी पुरी पहुंचे कासी विश्वनाथ के दर्शन किये कासी से । गया धाम पहुंचे गया धाम में पिंड दान क्या फिर आगे श्री जगन्नाथ पुरी की यात्रा कीये । श्री जगन्नाथ पुरी में छोटे छता में रुके सभी जगह दर्शन कीया एक दिन समंदर में स्नान कर रहे हैं थे अचानक लहर आई कोई पूर्व जन्म का पाप उदे हूआ । उठाकर रेती में फेंक दिया ठंडी लग कर भुखार चणगाया श्री जगन्नाथ पुरी से श्री भरतदास जी ट्रेन पकड़ कर चलदीए बिहोसी में मैहर वाली माता पहुंचे । फिर दूसरी ट्रेन पकड़ कर सीधे मुरैना आए । मुरैना से जौरा आये जौरा से भूआ के लडके छडेह लेआए । छडेह में श्री भरत दास जी बिहोस थे । भूआ के लडके साधू का भेस उतार कर धोती कुडता पहना दिया ओर भम्पुरा लेगये । कुछ दिन बाद ठीक हो गये तो बडा दुख हुआ । एक दिन बैल ने सींग मारा हाथ की कौनी में कोटसिथरा में तीन टाके आए । बैल धर्म का सरुप पूर्व जन्म के पुन्न उदे हूए प्रेरणा मिली अगर भगवान श्री सीताराम जू सरकार के दर्शन करना है तो भागौ हिआ से । उस समय पास में एक पैसा नहीं पिता जी से कमंडल खरीदने के लिए पैसे मांगे तो नहीं दिये सोचा कि घर छोड़ कर चला जाएगा । श्री भरतदास जी अपने लछका रास्ता नापा कोटसिथरा से आगे गांव में कसी से 10 कसी 5 से रुपये मांग कर 40 रुपये का कमंडल खरीदा । करह विहारी सरकार के दर्शन किये श्री महाराज जी ने लंबा चोड सरीर देख कर बहुत प्रशंन हूए । कहां अनुष्ठान कीजिए श्री भरत दास जी को गुरु देव भगवान तो मिले घोडा बाले महाराज जी के रूप मे लेकिन श्री सद् गुरु देव भगवान नहीं प्राप्त हूए श्री श्री अंनन्त श्री विभूषित श्री राम दास जी महाराज श्री रामायणी जी के रुप मे श्री सद् गुरु देव भगवान की प्राप्ति हुई बाई महाराज ने एक तगड़ा संख दिया ढाई किलो का चिमटा मूंज का आडबंद 2 लंगोटी 2 अचला 1 चादरि तिलक चंदन का समाइन । माला झोली । श्री राम चरित मानस का गुटका । विनय-पत्रिका । हनुमान चालीसा बस इतना सामान्य करह धाम में महाराज जी की रसोई बनाना भजन करना उस समय 1 माला गुरु मंत्र की 6 हजार श्री राम मंत्र का जाप 11 माला शरणा गति मंत्र की 7 पाट हनुमान चालीसा के 11 पद विनय-पत्रिका के । एक नवाह पारायण श्री राम चरित मानस का पाठ 25 हजार सीताराम नाम का जाप 2 घंटा पटिया के पास कीर्तन तो हर हलति में करना था उस समय श्री बैष्णम दास जी श्री जगदीश दास जी श्री भरत दास जी श्री करह विहारी सरकार की सेवा में थे रात्री में झालि बजाते हुए कीर्तिन करते परिक्रमा में क्या आनन्द की अनुभूति होती थी। कुछ दिन बाद महाराज जी ने । श्री

12:58

श्री भरत दास जी अयोध्या पुरी
आज दोपहर 12:43 देखा गया

भाग 5

बैष्णम दास जी के साथ श्री भरत दास जी को वृन्दावन धाम करह आश्रम की सेवा में भेज दिया भाग 2

सुबह 10:57

भाग 3 श्री वृन्दावन धाम में नत्य नियम करते हुए आश्रम में झाडू लगाना लंगर पर फुलक सेकना वृन्दावन धाम की नत्य परिक्रमा करना जमुना जी का स्नान करना श्री बाँके बिहारी का दर्शन राधा वल्लभ जी का दर्शन करना श्री श्री अंनन्त श्री विभूषित श्री राम रत्न दास जी महाराज श्री पटिया बाले बाबा का सिय पिय मिलने महोत्सव के दर्शन करने के लिए । श्री भरत दास जी करह धाम पधारे एक दिन श्री सद् गुरु देव भगवान श्री करह विहारी सरकार से प्रार्थना कीया क्या कलजुग में भगवान श्री सीताराम जू सरकार के साछत दर्शन नहीं होते हैं तब महाराज जी ने कहा हमारे श्री पटिया बाले महाराज जी के गोद में सात दिन तक श्री राम लला खेलते रहे । इसी कलजुग में मीरा बाई को साछात दर्शन हूए । तुकाराम जी को साछात दर्शन हूए । नामदेव जी को साछात दर्शन हूए । एक नाथ जी के घर में श्री खंन्डा के रुप में सेवक बनि के रहे । जना बाई के साथ आटा पिसवाते थे। तब श्री भरतदास जी ने प्रार्थना कीया के हम को कैसे दर्शन होगे । तब श्री महाराज जी ने कहा रास लीला विहारी जू । सरकार के माथे पै मुकुट है । तब तक साकेत विहारी में एवं लीला विहारी कोई अंन्तर नहीं है । जिस दिन आप को श्री राम जी के साछात दर्शन होगे तो किसी लीला सरुप के रुप मे होगे । श्री पटिया बाले महाराज जी के सिय पिय मिलने महोत्सव में एक से एक बडे महापुरुष पधारे वृन्दावन धाम से श्री स्वामी फते कृष्ण जी की रास लीला मंडली पधारी। श्री मिथिला आँचल से श्री किशोरी शरण श्रृंगारी जी के साथ मैं श्री भरतदास जी के उपर कृपा बरसाने के लिए दूल्हा दुलहन श्री सीताराम जू सरकार एवं श्री राम जी महाराज के अनुज श्री लझ्मण लाल जी महाराज पधारे सुबह रास लीला होती थी दुपैर में संत भगवान के प्रवचन एवं सिध्द आश्रम बक्सर से पधारे हुए सिया अनुज श्री नेह निधि भईया जी के मुखारविंद से श्री मिथिला रस की बर्षा श्री दूल्हा दुलहन श्री सीताराम जू सरकार की मधुर मधुर बचनामृत । श्री भरतदास जी की विचित्र स्थिति होगई एक टक जुगल सरकार के चरणों में ध्यान लगा कर सीताराम सीताराम का जाप करते हुए नेत्रों में आसू की धार चल रही थी क्या उस समय आनन्द आराह था बाणी का विषय नहीं है । कार्यक्रम के बाद में । एक दिन श्री भरत दास जी के सपने में दिव्य प्रकाश का एक आभा मंन्डल फैला हुआ है श्री सीताराम विवाह महोत्सव होरहा है श्री जनक पुर धाम का ध्रष दिव्य विवाह मंडपं सजा है मणिनि का दिव्य प्रकाश होरहा है श्री राम जी की बरात आई है द्वारा चार परछन आरती सुनेना मईया उतार रही हैं चारों दूल्हा दलहन श्री सीताराम जू सरकार भमरी फिर रहे है । श्री

भाग 6

भरतदास जी के नेत्र खुले तो एक अचरज जैसा लगा कि कहीं श्री सीताराम विवाह महोत्सव भी होता है स्नान ध्यान करते हुए उसकी याद में खोए हुए थे । नित्य नियम पूरा करने के बाद श्री सद् गुरु देव भगवान श्री करह विहारी सरकार के चरणों में लम्बी दंडवत करि के देखा कि पीला लिफापा रखा है श्री गुरु देव भगवान के चरणों कमल में । उसे उठाकर पढा तो उसमें लिखा श्री सीताराम विवाह महोत्सव मिथिला कुंज जयपुर । श्री भरत दास जी ने श्री सद् गुरु देव भगवान से प्रार्थना कीया के आज सपने में श्री सीताराम विवाह महोत्सव का दर्शन हुआ तब श्री गुरु देव भगवान ने कहा कि प्रतिछ दर्शन कीजिए । श्री भरतदास जी जयपुर मिथिला कुंज में पहुंचे बडे प्रेम से रुकने के लिए रूम दिया प्रसाद पाए । पहले श्री भरतदास जी भगवान श्री सीताराम जू सरकार के प्रति अपने माता पिता जी का भाव रखते थे । सामको मुनि आगमन लीला हूई थी तो विश्वामित्र जी की जगह पर श्री भरतदास जी को बैठा दिया उसी समय भाव उत्पन्न हूआ मेरे तो श्री राम जी पीता जी है मुजे श्री राम जी का गुरु क्यों बनाया बस रोना सुरू होगया कार्यक्रम बिश्राम के समय श्री राम जी महाराज से छिमा मांगी । सरुप सरकारों की चरण सेवा करते सरुप सरकार के भजन पाने के बाद उनकी प्रसादी पाते सयन करते तो चरणों की सेवा करते सिंघासन पर बिराजमान होते तो जुगल सरकार के चरणों में ध्यान लगा कर सीताराम सीताराम का जाप करते थे नेत्रों से आसू की धार चलती रहती थी । एक दिन भामरी सिंदूर दान होने के बाद सखी दूल्हा दुलहन श्री सीताराम जू सरकार को कोबर घर एवं दूधा बाती एवं घीया बाती एवं थापा घर अपने अपने देश की अलग अलग भाषा मिथिला में इस बिधी का नाम कोबर घर है एवं कोबर घर में ले गई । श्री भरतदास जी भी अन्दर चलेगये तो श्री लझ्मण लाल जी नाराज एवं गुस्सा होगए उस दिन ना अपनी भोग लगाई हूई भोग प्रसादी दिया ना चरणों की सेवा करने दिया अब तो श्री भरत दास जी बहुत प्रार्थना कीया के हे प्रभु हम तो साधारण जीव हैं आप चाहो तो मछर को ब्राह्म एवं ब्राह्म को मछर बना सकते है मेरे अपराध को छिमा करें । फिर भी छिमा नहीं किया तो । श्री भरतदास जी अपने सयन कछ में जाकर लेटे लेटे रोइ रहे थे आसू की धार चल रही थी रात्री के 11 बजे सब सो गए थे तब श्री भरतदास जी के कछ में श्री राम जी महाराज प्राकटय हो गये हाथ पकरि के बैठा कीया अपने हृदय से लगालीया उस समय जो आनन्द आया बाणी का विषय नहीं है अंग अंग से दिव्य प्रकाश नकलि राह था फिर बोले भरतदास जी क्यों रो रहे हैं चली ए हमारे पास रूम से बाहर निकल कर अन्तर ध्यान होगए । श्री भरत दास जी ने सोचा हम को मनाने लीला सरुप आ गये हैं उसी समय जहाँ सरुप सरकार के सयन कछ में गया तो सभी सोए हुए थे उसी दिन से लीला विहारिणी विहारी जू

12:59

श्री भरत दास जी अयोध्या पुरी
आज दोपहर 12:43 देखा गया

भाग 7

सरकार को अपना इस्ट मान लिया श्री सद् गुरु देव भगवान श्री करह विहारी सरकार की बाणी सत्य होगई महाराज जी ने श्री भरत दास जी से कहा जिस दिन भगवान के दर्शन होगे तो किसी लीला सरुप के रुप मे होगे सो होगए भाग 3 सुबह 10:57

आज

भाग 4 श्री भरत दास जी कार्यक्रम के बाद में सरुप सरकारों की सेवा में रहने लगे श्री राम जी श्री किशोरी जी एवं श्री लझ्मण लाल जी ।तीनों सरकार थे एवं श्री हनुमान जी के प्रतीक श्री जानकी शरण श्रृंगारी जी महाराज श्री मिथिला कुंज से विदा होकर जयपुर में । एक वंशी बाले आश्रम में कुछ दिन निवास कीए जगे जगे से निमंत्रण आते कहीं होली महोत्सव कहीं झांकी श्री भरत दास जी हर समय सरुप सरकारों की सेवा में रहते । कभी लाइट चली जाती तो बीजना से हबा करते उनकों पियास लगती तो पानी पिलाते स्नान करना । उनके कपड़े धोना तेल मालिश करना जुगल सरकार के चरणों में ध्यान लगा कर सीताराम सीताराम का जाप करते रहते । कुछ दिन बाद श्री अयोध्या पुरी के लिए प्रस्थान किये । गोला घाट में श्री सद् गुरु सदन में निवास कीए चैत का महीना था । श्री राम नवमी महोत्सव चलराह था सामको श्री राम जी किशोरी जी का श्रृंगार होता था । मंदिर में सिंघासन पर बिराजमान होते गायक संत भगवान श्री राम जन्म बधाई के पद गायन करते श्री भरत दास जी को दिव्य आनन्द की अनुभूति होती थी। रोज सरयू नदी में स्नान करते श्री कनक भवन दशरथ महल राम जन्म भूमि हनुमान गढी ओर अनेकों मंदिरों के दर्शन करने से दिव्य आनन्द की अनुभूति होती थी। श्री राम नवमी महोत्सव के बाद कुछ दिन ओर निवास कीए अयोध्या जी में । एक परेशानी आती थी श्री भरत दास जी के सरुप सरकार छोटे छोटे बालक थे बाल किरीणा करते तो श्रृंगारी जी डाट फटकार लगाते । तो बडा दुख होता था श्री भरत दास जी इसी कारण चलने लगे तो श्री राम जी के सरुप बहुत रोय के महाराज जी हम को छोड़ कर ना जाओ प्रार्थना कीये इस समय जाना है भ्रमण करते हुए । चल दिए मुरैना में तपस्वी बाबा की गुफा में एक दो दिन रुके । फिर कैलारश में श्री मनोहर दास जी महाराज की बगिया में रुके उस समय श्री राम जन्म भूमि मंदिर का बिबाद चलराह था । हजारों लोगों कैलारश से अयोध्या जा रह थे श्री भरत दास जी भी उनके साथ चलदीए । एक साधू समाज में कहाँ बति है जैसा करों संग बैसा चणे रंग जैसा पी ओ पानी बैसी बने बानी। जैसा पाबौ अन्न बैसा बने मन तो कुसंग के कारण श्री भरत दास जी गाजा की चिलम पीने लगे । उस समय सुबह उठकर डाई किलो पानी पीकर डोलडाल हो कर । मिट्टी से हाथ पैर धोकर तब कुन्जल किरिया

श्री भरत दास जी अयोध्या पुरी
आज दोपहर 12:43 देखा गया

भाग 8

करते थे कुन्जल किरिया होती हैं करीब एक बालटी जल पीने के । बाद उलटी करना उस से लाभ होता है सरीर के अन्दर कोई रोग उत्पन्न नहीं होता है । तब स्नान कर के तिलक चंदन लगा कर नित्य नियम करने के बाद प्रसाद पाना । कार्य सेवकों के साथ कैलारश से रेलगाड़ी पकड कर हजारों लोग ग्वालियर पहुंचे ग्वालियर से झांसी पहुंचे झांसी में करपू लग गया इसी कारण आगे नहीं जा सके एक कहाबति है झांसी गले की फांसी दतिया गले का हार ललित पुर ना छोडीये जबतक मिल उधार । कार्य सेवक नारा लगाते थे राम लला हम आएंगे मंदिर भही बनाएँगे बच्चा बच्चा राम का जन्म भूमि के काम का करपू लग ने के कारण कार्य सेवक आगे नहीं जा सके । बापिस हो गये लेकिन श्री भरत दास जी नहीं लोटे अपनी हट पर अडे रहे उस समय भोजन पाना छोड़ दिया केबल एक दो सेव पाइलेते कपड़े भी उतार दिए केबल लंगोटी पहने थे गाजे के नसा में बोले जबतक अयोध्या नहीं पहुंचे गे तब तक भोजन नहीं करेंगे कपडा नहीं पहने गे उस समय कमर तक बडी बडी जटा थी जो बर का दूध लगा कर बनाइ थी हाथ में ढाई किलो का चिमटा था । लौकी का तूमा पात्र एवं कमंडल था तब झांसी से एक दतिया का एमेला था जो श्री भरत दास जी को अपनी मार्सल में बैठा कर दतिया ले आया बोला हम अयोध्या भेज देगे लेकिन दतिया में लाकर उतार दिया अयोध्या नहीं भेजा एक हनुमान जी के आश्रम में रुके उस समय एक बालटी जल पीकर कुन्जल किरिया करते थे स्नान करने के बाद गाजे की चिलम पीते भोजन नहीं करते इसलिए । गर्मी उंची होगई थोड़ा पागल पन होगया तब रोड पर निकले करपू लगा दिया रोड पर जाइम लग गया इसी कारण पुलिस आ गई पकड़ ने तब श्री भरत दास जी हनुमान जी के मंदिर में घुसि गए । हनुमान जी महाराज की 8 फुट की मूर्ती थी हनुमान जी महाराज की जेट भरली पुलिस बाले पकड कर खीचा तो साथ में हनुमान जी की मूर्ति उखड आई पुलिस बाले ओर गुस्सा होगए तब तक एस पी आ गया तो अपनी कार में बैठा कर हस्पीटल ले गया चोट लग गयी थी डाक्टर से मल्लम पट्टी कराई । तब श्री भरत दास जी से एस पी साब ने कहा महाराज जी आप अयोध्या का हट छोड़ दें अपने गुरु आश्रम चले जाइए लेकिन जो लोग गाजा पीते हैं बै लोग जिद्दी होते है नहीं माना कहाँ हम तो अयोध्या जाएंगे हास्पीटल में उधम मचाने लगे तब पुलिस बाले पकड कर थाना ले गए । कहाँ महाराज जी पलंग पर सो जाओ ओर भोजन लेकर आएं तो नहीं भोजन कीया ना पलंग पर सो ए जमीन पर बैठ कर रात्री भर हनुमान चालीसा स्तुति सीताराम नाम संकीर्तन करते रहे । सुबह पुलिस बाले ने कहा महाराज जी आप अपने गुरु आश्रम चले जाइए लेकिन फिर भी नहीं माने तब समझा के महाराज जी पागल होगए है दो पुलिस बाले बस में बैठा कर ग्वालियर एवं लशकर में पागल खाने

भाग 9

में भरती करदिया । पागल खाने में डाक्टर लोगों ने श्री भरत दास जी की जटा कटबदी साधू का भेस उतार कर पाजामा कुडता पहना दिया । नींद की गोली टेबलेट पाने से जमिके सोए दूध दलिया पबाया भोजन कीया तो 5 दिन में ठीक होगए तब । श्री भरत दास जी ने कहाँ हम को छोड़ दिया जाए लेकिन डाक्टर लोग छोडना नहीं चाहा रहे कहाँ आप के घर बाले आएंगे तब छोड़ गे तब श्री भरत दास जी ने कहा हम लोग साधू है घर नहीं रहते हैं आश्रम में रहते हैं लेकिन डाक्टर लोगों ने एक नहीं मानी तब श्री भरत दास जी ने कम्बल फाण कर लंगोटी आडबंद बना कर पहनि लिए कुडता उतार दिया पाजामा पहने रहे । फिर श्री भरत दास जी को हनुमान जी महाराज का ध्यान आया हनुमान चालीसा में लिखा है सत बार पाट करे जो कोई छूट बन्दि महा सुख होई । सत बार के सो बार होते है साम को नींद की गोली दिया तो नहीं पाया रात्री भर हनुमान चालीसा का जाप करते रहे सुबह तो मन में आबै दीबार तोड कर भाग जाए साम के समय डाक्टर लोग रोगियों को दबा बांटने में लगे थे । इतमे श्री भरत दास जी ने हनुमान जी महाराज से प्रार्थना कीया के आप चाहें तो छुटकारा मिल सकता है तब श्री हनुमान जी महाराज की कृपा से सोचालए के पीछे से एक मंजिल की छति के उपर चडि गए फिर दूसरी मंजिल पर चडि गए रात्री के 9 बजे 2 मंजिल की छति से बाहर की तरफ हनुमान जी का नाम लेकर कूद पडे कहीं चोट नहीं लगा फिर भागे जेल के पीछे होकर । सिन्देकी छावनी के चौराहे पर निकले खाली लंगोटी पहने थे दुकानदार ने देखा तो अबाज लगाई दीमान जी एगया पागल । तब श्री भरत दास जी दुकान दार के पास जाकर कहा भईया जी मैं पागल नहीं हू करह बाले महाराज जी का शिष्य हू अयोध्या जी जाराह था तो पागल घोषित कर के बंद कर दिया था । बै दुकानदार गरगज के हनुमान जी के पुजारी थे आश्रम में ले गए भोजन पबाया रात्री भर हनुमान जी के मंदिर में रुके सुबह बस में बैठ कर नूराबाद के पास टेकरी पर उतरे एक गुरु भाई से अचला लिए पहन कर करह धाम चले गए । श्री सद् गुरु देव भगवान ने सुना तो बहुत दुखी हूए कहाँ अयोध्या जाना था तो हमसे संपर्क करते तो हम भेज बा देते फिर श्री करह विहारी सरकार ने कहा श्री भरत दास जी से आप का साधु का भेस उतरि चुका है दुबारा पंच संसकार होगा तब श्री भरत दास जी ने कहा श्री सद् गुरु देव भगवान से कृपा करें के पंच संसकार करदिया जाए श्री महाराज जी ने कहा घोडा बाले महाराज जी के पास जाओ उन्ही से करबाओ तब श्री भरत दास जी ने कहा श्री महाराज जी मैने तो सदा से आप हीं को श्री गुरु देव भगवान माना हैं आप हीं की कृपा से भगवान के दर्शन हुए आप हीं कृपा करि के पंच संसकार करें तब प्रार्थना कीया के जब तक पंच संसकार नहीं करेंगे तब तक भोजन जल कुछ भी सेवन नहीं करूंगा

1:01

श्री भरत दास जी अयोध्या पुरी
आज दोपहर 12:43 देखा गया

भाग 10

। तब श्री बाई महाराज ने कहा महाराज जी साधु मर जाएगा इस का पंच संसकार करों तब श्री सद् गुरु देव भगवान श्री करह विहारी सरकार ने श्री भरत दास जी का पंच संसकार कीया एवं गले में तुलसी की कन्ठी पहनाई लंगोटी पहनाई जनेऊ धारण कीया द्वादश तिलक लगाए श्री राम मंत्र दिया दाहिने कान में श्री भरतदास नाम रखा तब श्री भरत दास जी ने श्री सद् गुरु देव भगवान के चरण कमल धौकर चंदन लगाया पुष्प माला पहना कर आरती उतारी लम्बी सासटाग दंडवत कीया तब चरणामृत पान कीया । श्री गुरु देव भगवान के भोजन पाने के बाद श्री सद् गुरु देव भगवान की सीत प्रसादी लीए तब भोजन कीया फिर करह में रह कर अनुष्ठान कर ने लगे एक श्री गुरु देव भगवान के छोटे गुरु भाई थे श्री गोपाल दास जी महाराज जो जौरा के पास मजरा गांव के बगल स्थान में रहते थे । सरीर से कमजोर हो गये करह धाम आगे थे तो गाली देते थे इसलिए कोई सेवा नहीं करना चाहता था । श्री भरत दास जी से श्री गुरु देव भगवान ने कहा आप सेवा कीजिए तब श्री गोपाल दास जी महाराज की सेवा में पहुंचे गये सिद्ध बाबा के पास परिक्रमा मार्ग में हरी बाबा बाली रूम में रुके थे । श्री गोपाल दास जी महाराज के कपड़े साफ कीए सूखे कपडे पहनाया तेल मालिश कीया भोजन लेकर आएं अपने हाथ से पबाया पानी पिलायें इस प्रकार 7 सात दिन सेवा कीया उनके बक्सा में 21 हजार रुपये थे महाराज की अगिया से लेजाकर बाईं महाराज के पास जमा कीए ओर श्री गोपाल दास जी महाराज घी बुरा बहुत पाते बार बार कहते घी बुरा पबाओ श्री भरत दास जी अपने हाथ से पबाते कभी कभी जमि के गाली देते थे श्री भरत दास जी इस कान से उस कान निकालते रहते एक दिन साम को बोले परामट बनाकर लाओ तब श्री भरत दास जी । भंडारे में गए अपने हाथ से परामटा बनाया गुरु भाई लोग देख कर बोले श्री भरत दास जी आज आपने परामटा खिला दिया तो साकेत वासी होजाएगे तो बास्तंमे एसा ही हूआ परामटा खाने के बाद थोड़ा सोए उस के बाद कहने लगे मेरे पैर दबाओ तो श्री भरत दास जी पैर दबाते रात्री भर सेवा करते रहें सुबह 4 बजे श्री भरत दास जी को जोर की नींद आई तो लेटगये उसी समय महाराज जी ने कहा घी बुरा पबाओ लेकिन नींद के कारण श्री भरत दास जी नहीं उटे तब सूयम उठे अपने हाथ से घी बुरा पाए ओर सो गए सुबह श्री भरत दास जी जगे तो देखा श्री गोपाल दास जी महाराज का साकेत वास होगया है उस समय श्री करह विहारी सरकार खैरागढ़ में थे तब आश्रम में जाकर गुरु भाईओं को बताया सब गुरु भाई इकट्ठे हो गये तब श्री गोपाल दास जी महाराज को रत्न सागर के पास चिता बनाई श्री गोपाल दास जी महाराज के सरीर को स्नान कराया गले में तुलसी की कन्ठी पहनाई जनेऊ धारण कीया नई लंगोटी अचला धारण कराया उस के बाद चिता पर

पहनाई जनेऊ धारण कीया नई लंगोटी अचला धारण कराया उस के बाद चिता पर लिटाया सभी गुरु भाई एवं श्री फलाहारी बाबा जी महाराज ने श्री भरत दास जी से कहा आप ने सेवा कीया हैं इसलिए अग्नि संसकार आप ही कीजिए तब श्री भरत दास जी ने अग्नि संस्कार किया सभी गुरु भाई स्नान करि के तिलांजली समर्पित कीए तब आश्रम की धुलाई सफाई के बाद विजय राघव सरकार की आरती हूआ फिर 13 दिन के बाद भंडारा हूआ श्री सद् गुरु देव भगवान भी आगे थे फिर श्री भरत दास जी श्री गुरु देव भगवान की सेवा एवं भजन में लगि गए जय श्री सीताराम भाग 4 **भाग 11**

10:49

श्री भरत दास जी अयोध्या पुरी
कल रात 8:49 देखा गया

भाग 12

भाग 5 श्री सीताराम श्री भरत दास जी पहले एक महीना से जादा एक जगह नहीं रुकते थे। साधू समाज में कहाँ बति है बैहता पानी निर्मला रुके सो गदला होइ साधू तो रमता भला दाग ना लागे कोइ श्री करह विहारी सरकार 15 दिन करह रहते थे 15 दिन खैरागढ़ इआ वृन्दावन में रहते थे । करह धाम से श्री भरत दास जी भिर्मण करने के लिए निकल गए सिद्ध स्थल कपसोन पहुंचे जो करह आश्रम की साखा है । कुछ दिन रह कर आगे चलदीए छिकाई खोह पहुंचे एक संत भगवान रहते थे श्री भरत दास जी कुछ दिन निवास कीए । फिर आगे चलदीए नरके पहुंचे नीचे खोह में एक आश्रम हैं संत भगवान रहते है दर्शन सत्संग कीए कुछ दिन निवास कीए । आगे चलदीए कहीते की घटिया पर शीतला माता के मंदिर पर सिद्ध संत श्री शिवगिरी जी महाराज रहते थे। उनके के दर्शन किये एक महीना निवास कीए तबतक । श्री श्री अंनन्त श्री विभूषित श्री राम रत्न दास जी महाराज श्री पटिया बाले बाबा के सिय पिय मिलन महोत्सव का समय नजदीक आ गया । सो श्री भरत दास जी करह धाम चले आए कार्यक्रम में अनेक संत भगवान पधारे वृन्दावन धाम से श्री फते कृष्ण स्वामी जी की रास लीला आई कार्यक्रम में 1008 श्री राम चरित मानस के पाट बैठे थे । श्री सिद्ध बाबा पर श्री राम चरित मानस की 24 चौपाई अखंड चलती थी। गऊ साला की बगल में अखंड हरे कृष्णा हरे राम का कीर्तन चलता था। उस की बगल में अखंड श्री हनुमान चालीसा का पाठ चलता था। आश्रम के अन्दर में श्री राम नाम बैंक में अखंड श्री राम चरित मानस का पाठ चलता था । श्री सिद्ध पटिया के पास श्री राम रत्न दास जी महाराज के समय से अखंड कीर्तन चलता रहता है । सीताराम राधेश्याम का अनगिनत लोग एक साथ कीर्तन करते हैं ।अखंड भंडारा चलता था 8 दिन तक माल पूआ तसमई बूंदी सांग प्रसाद। आखिरी दिन 700 सों मन आटे के माल पूआ बनते थे ।मेला के अन्दर जो कोई आता भरपेट भोजन पानेके लिए मिलता था। श्री करह आश्रम की बगल में गंगा सागर पर। आश्रम के चारों तरफ संत भगवान की राबटी लगती थी एक कुंभ मेला जैसा लगता था दिव्य आनन्द की अनुभूति होती थी । सुबह 9 बजे से रास लीला होती थी 12 बजे तक 1 बजे से संत भगवान के प्रवचन । श्री मिथिला धाम से पधारे हुए श्री सीताराम जू सरकार के लीला सरुपो द्वारा झांकी होती । श्री मैथिली भाषा में पद गायन होते थे। एवं श्री किशोरी जी के अनुज भईया नेह निधि उप नाम श्री मन नारायण दास भक्त माली जी महाराज के द्वारा श्री मिथिला रस की बर्षा होती थी । श्री भरत दास जी मिथिला रस के पद सुनते तो सरीर पुलकित हो जाता नेत्रों से आसू की धारा चलती गदगद कंठ से सीताराम सीताराम नाम का जाप चलता रहता। अयोध्या की तरफ से श्री संत गोपालाचार्य जी महाराज वशिष्ठ गोत्री होनेके नाते श्री

राम जी को अपना छोटा भाई मानते थे। इसलिए अनेक प्रकार से श्री राम जी चारों भाईओं की बाल लीला सुनाते थे।श्री फते कृष्ण स्वामी जी की रास लीला के श्री बाल कृष्ण माखन चोर ने श्री भरतदास जी का मन चुरा लीया। कार्यक्रम के बाद में श्री सद् गुरु देव भगवान से प्रार्थना कीये रास विहारी की सेवा में जाने के लिए हरिद्वार के लिए रास लीला मंडल जाराह था। पहले श्री भरत दास जी श्री गुरु देव भगवान को दंडवत करने जाते तो श्री गुरु देव भगवान को कम दिखता था इसलिए पूछते कौन है तो श्री बाई महाराज कहती बोहें लम्बे नारायण तो महाराज जी पूछते गेट में निकल आया कि ऊँचा कराना पढेगा एसे कहेकर हस्ते थे। श्री गुरु देव भगवान ने बाई से कहा लम्बे नारायण के लिए हमरी प्रसादी गर्म अल्पी देऊ हरिद्वार में बहुत डंडी पडती हैं। तब श्री बाई ने गर्म अल्पी लम्बे नारायण एवं श्री भरत दास जी के लिए दिया श्री रास लीला मंडल के साथ टिर्क से हरिद्वार पहुंचे। पहले श्री भरतदास जी को सरीर मैं कोई तकलीफ होती तो इलाज नहीं करते थे केबल सीताराम सीताराम जाप करते हुए ठीक होजाते क्योंकि रोग को हटाने से दूसरे जन्म में भुगतना पड़ता है श्री भरतदास जी के सरीर में भुखार आ गया किसी को बताया नहीं श्री लाल प्रेम धन ठाकुर जी ने पूछा आप की तबियत किसी है तो कहा बिलकुल ठीक हू एसा कहते हीं भुखार गाइब होगया श्री गंगा जी में स्नान कीया साम को रास लीला हूई श्री भरतदास जी सामने बैठ कर गदगद कंठ से सीताराम सीताराम जाप करने से सरीर पुलकित होने लगा नेत्रों से असू बहने लगे बडा आनन्द आता था हरिद्वार से वृन्दावन धाम आ गये बनखंडी महादेव के पास श्री फते कृष्ण स्वामी जी का श्री राधाकांत भगवान का मंदिर है। उसी में रुके थे कार्यक्रम में जो कोई भेंट दछिण मिलती तो श्री लीला सरुपो की सेवा में लगा देते ठाकुर जी श्री राधारानी की अष्ट सखीनि की सेवा करते ठाकुर जी श्री जी को स्नान कराते कपडे दोते तेल मालिश करते ओर ठाकुर जी महाराज ने श्रृंगार बनाना सिखा दिया तो मौती धागा से हार कंठा बाजू बन्द पोछी हथ फूल कमर पेटी नथ नासा मणी बना कर श्री ठाकुर जी श्री राधारानी एवं अष्ट सखी को पहनाते थे ओर पहले श्री भरतदास जी भगवान श्री सीताराम जी की सेवा माता पिता के भाव से करते थे अब रास लीला की सेवा करने से भाव में परिवर्तन होगया उस समय श्री भरत दास जी भाव से अपने को किशोरी जी की सखी मानने लगे। एक दिन सपने में देखा दिव्य महल बना है मणिनि का दिव्य प्रकाश होरहा है उस महल के मध्य में अष्ट कुंज बनी है स्नान कुंज श्रृंगार कुंज भोजन कुंज रसोई कुंज चौपरि कुंज झूलन कुंज रास कुंज सयन कुंज अष्ट सखी प्रिया प्रितम की सेवा में लगी थी बहुत बडा महल था सभी सखी की अलगअलग कुंज थी श्री ठाकुर जी सखी नेके भाव के अनुसार अनेक रूप धारण

कर के उनकी इच्छा पूरणकरते श्री भरतदास जी का परिवर्तन होगया एक सखी बन गई एक दिव्य कुंज में पलंग बिछा है गदा मखमल की चादर बिछी है तकिया मसनद लगे हैं उसी पै जाकर सोगई चारों तरफ सेवा में कई सखी खडी है कोई चमर लिए कोई बीजना कोई पान दानी कोई पीक दानी उसी समय श्री ठाकुर जी पधारे ओर साथ में सयन कीए उस समय एक दिव्य आनन्द आराह था बाणी का विषय नहीं है एसा महसूस होरहा था के दिव्य साकेत धाम में अपने निजी महल में अपने प्रीतम के साथ विहार कर रही हैं रात्री भर के सपने में एसा महसूस हूआ के कई जुगो से उसी महल में निवास कर रही हैं। सपना टूटने के बाद भी श्री भरत दास जी नेत्र बाद कीए उसी अलोकिक धिर्ष के चिंतन में डूबेरहे ।जो इच्छा करउँ मन माही राम कृपा कुछ दुर्लभ नहीं भक्त जिस भाव से भगवान की भक्ति करता है भगवान भी उसी भाव के अनुसार फल देते है भक्त को तन मन धन से भगवान के चरणों में समर्पित होजाना चाहिए हर समय मन से प्रार्थना करते रहना चाहिए हे नाथ में आप का हूँ आप हीं मेरे व्यवस्थापक है हे नाथ में आप को भूलूँ नहीं एक छण के लिए नहीं भूलूँ हे नाथ आप के नाम रुप लीला धाम में दिन दूनी राति चौगुनी प्रेम निष्ठा बडती रहे इस प्रकार से प्रार्थना करने से भक्त के उपर भगवान की जल्दी कृपा हो जाती है । राम ही केबल प्रेम प्यारा । जानि लेऊ जो जानन हारा ।सीताराम सीताराम कहिए जाहिं विधि राखे राम ताहि विधि रहिए । मुख में हो राम नाम राम सेवा हाथ में तू अकेला नहीं प्यारे राम तेरे साथ में कीएगा अभियान तो मान नहीं पाएगा होगा बही प्यारे जो श्री राम जी को भाएगा । फल आसा त्यागि सुभ काम करते रहिए जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए । सीताराम सीताराम कहिए । महलों में राखे चाहे झौपडी में बास दे धन्यवाद निर्बबाद राम राम कहिए जाहिं विधि राखे राम ताहि विधि रहिए। सीताराम सीताराम कहिए। आसा एक राम जी से दूजी आसा छोड़ दें नाता एक राम जी से दूजा नाता तोड़ दे साधू संग राम रंग अंग अंग रमीए । जाहिं विधि राखे राम ताहि विधि रहिए । सीताराम सीताराम कहिए । विधि का विधान जानि हानि लाभ सहिए । काम रस छौड प्यारे राम रस पगीए जाहिं विधि राखे राम ताहि विधि रहिए। सीताराम सीताराम कहिए। श्री भरतदास जी हर समय नाम रुप लीला धाम के चिन्तन में डूबे रहते थे ओर प्रतिछ रुप से रास विहारी की सेवा में तत्पर रहते थे एक बहुत बड़ा ताडबिर्छ के पता का पंखा रखते गर्मी के समय में रास विहारी की पंखा से हबा करते हुए रास लीला का आनन्द लेते थे जय श्री सीताराम भाग 5

भाग 14

सुबह 10:47 ✓

1:54

श्री भरत दास जी अयोध्या पुरी भाग 15
कल दोपहर 12:31 देखा गया

भाग 6 श्री करह विहारी सरकार के शिष्य श्री भरत दास जी का ओर आगे का जीवन चरित श्री सद् गुरु देव भगवान श्री करह विहारी सरकार ने एक बार बताया । जबतक रास लीला विहारी सरुपो के माथे पर मुकुट चंद्रिका हैं तब तक साछत साकेत एवं गोलोक विहारी भगवान है । श्री साकेत धाम एवं गोलोक धाम दो नहीं है एक ही है । श्री मन नारायण दास भक्त माली जी मामा जी के प्रवचन में । श्री भरत दास जी ने सुना जिस लोक में हम रहते है इसे मिर्तू लोक एवं भू लोक कहते हैं । इस के नीचे सात लोक है इन्के नाम है 1 अतल लोक 2 वितल लोक 3 सुतल लोक 4 तलातल लोक 5 महातल लोक 6 रसातल लोक भक्त प्रह्लाद के पुत्र महा राज बली का लोक है 7 पाताल एवं नाग लोक है इस में नाग राज बासुकी अपनी प्रजा के साथ रहते है । 1 मिर्तू लोक एवं भू लोक के ऊपर 2 भुबर लोक 3 मैह लोक 4 जन लोक 5 तप लोक 6 शुर्ग एवं देव लोक देव राज इंद्र का लोक है इस में देवता रहते हैं 7 ब्रहमा जी का लोक है । श्री सीताराम जू सरकार ब्रहमा जी के रूप में सृष्टि की रचना करते हैं । इस के उपर पूर्ण ब्रह्म भगवान श्री सीताराम जू सरकार का सत्य लोक एवं साकेत धाम है । साकेत धाम के मध्य में राजदरबार है भगवान श्री सीताराम जू सरकार राज करते हैं । सभी परिकर एवं प्रजा के सहित रहते हैं । साकेत धाम इतना बड़ा है उसी के अन्दर में दछिण की तरफ छीरसागर एवं बैकुंठ हैं । इस में भगवान श्री सीताराम जू सरकार लक्ष्मी नारायण के रूप में सयन करते हैं शेष सईया पर । बैठंक में श्री सीताराम जू सरकार बिष्णु के रुप में तीनों लोकों का पालन करते हैं । पछिम की तरफ साकेत धाम के अन्दर में गोलोक धाम है गोलोक के अन्दर में वृन्दावन बरसना नन्द गांव गोवर्धन पर्वत गोकुल मथुरा 84 कोस ब्रिज एवं द्वारका पुरी है भगवान श्री सीताराम जू सरकार का क्रीडा स्थल है इस में श्री राधा कृष्ण के रुप में महा रास लीला एवं गऊ माता को चराते हैं अनेकों लीला करते है । द्वारिका में भगवान श्री सीताराम जू सरकार द्वारकाधीस के रूप में महाभारत में श्री अर्जुन को गीता उपदेश देते हैं । दुष्ट का संघार करते है द्वारिका में 16 हजार 108 सों आठ विवाह एवं सोले हजार एक सौ आठ पट रानी के साथ अनेक रूप धारण कर के विहार करते हैं । साकेत धाम के अन्दर में ही उत्तर की तरफ बद्रीनारायण धाम है । भगवान श्री सीताराम जू सरकार बद्रीनारायण के रूप में तपस्या करते हैं । पास में ही शिव लोक है भगवान श्री सीताराम जू सरकार शिव पार्वती के रूप में तपस्या करते हैं एवं सृष्टि का संघार करते हैं । साकेत धाम के अन्दर ही में पूरब की तरफ जनकपुरधाम है जहाँ पर श्री जनक जी महाराज अपनी प्रजा के साथ राज करते हैं । साकेत धाम के मध्य में अयोध्या पुरी हैं सरयू नदी बहती है अयोध्या पुरी के अन्दर में । भगवान श्री सीताराम जू सरकार का

अंतरंग लीला स्थल प्रमोद वन हैं । इस में भगवान श्री सीताराम जू सरकार एवं सखी नि के अलावा अन्य पुरुष का प्रवेश नहीं है । सर्व कारणों के आदि कारण श्री जानकी रमण के दो रूप हैं एक प्रगट । दूसरा परिच्छिन्न । परिच्छिन्न स्वरूप से वे श्री अयोध्या प्रमोद वन में रास करते रहते है । श्री जानकी रमण जू का यही रास विहारी रूप निज रस स्वरूप है । बृहदारण्यक की श्रूति कहती है अर्थात अकेले में रमण क्रिया होगी नहीं । अकेले कोई कैसे रमण करे । अत: दो बनने की इच्छा से प्रेरित होकर वही रसमय ब्रह्म पति पत्नी युगल रूप होकर अनादि काल से रमण कर रहे हैं । श्रूति के अनुसार उस आनन्दहू के आनन्द दाता ब्रह्म को इस विहार रस में असीम आनन्द मिलता है । भावना सिद्ध रसिकों की मान्यता में इस विहार दर्शकों को भी वही सुख मिलता है । श्री भरत दास जी साछात भगवान के भाव से रास लीला विहारी जू सरकार की सेवा करते थे । एक बार होसंगाबाद नर्मदा के किनारे रास लीला करने गए थे 8 दिन रास लीला हूई थी । श्री नर्मदा नदी में रास लीला का श्रृंगार एवं परदा की धुलाई सफाई करी सभी लीला परिकर मिल कर । कार्यक्रम पूर्ण होने के बाद श्री फते कृष्ण स्वामी जी अपनी मारूती से चले गए । श्री भरत दास जी रास लीला मंडल के साथ टिर्क से वृन्दावन के लिए आरहे थे । शीपुरी ग्वालियर के बीच में चलते टिर्क में श्री रास विहारी बाल कृष्ण के सरुप बोले बाबा आप टिर्क से कूद पंडो गे । श्री भरत दास जी से ठाकुर जी जो कहते करने के लिए तइयार रहते थे । फिर भी श्री भरत दास जी ने सोचा कि सादा भेस में बोल रहे हैं तो कहा । 5 पाँच सरुप कहें तो देखा जाएगा क्योंकि पाँच लोगों के बीच भगवान होते है । लेकिन होनी सबार थी पाँच सरुप सरकार कहदीए हा बाबा कूद पडो तो । श्री भरत दास जी 80 की स्पीड में चलते हुए टिर्क से कूद पड़े । गिरने के बाद बिहोस होगए लोगों ने टिर्क रोका कर देखा तो सरीर निस प्रराणा था । लेकिन रास लीला के लोग निर्मोही होते है रास्ते में छोड़ कर चले आए । जेष्ठ का महीना था लूचलरही थीं डंबर रोड पर पड पड सरीर की चमडी जल गई थी । बहुत देर बाद होस आया तो श्री राधा रानी को पुकार रहे थे राधा रानी पियास लगी है । थोड़ा थोड़ा होस आया कुछ समझ में नहीं आबै कि क्या हुआ तब बहुत देर बाद होस आया । कि हम टिर्क से कूद पड़े हैं खून से सरीर लत पत होरहा था पैदल आगे चलदीए । एक होटल पर स्नान कीए बस में बैठ कर ग्वालियर आए । टिर्नि पकड़ कर वृन्दावन के लिए चल दिए । मथुरा स्टेशन आया तो सरीर मैं फिर से बिहोसी आ गई दिल्ली पहुंचे तब होस आया । लोगों से पूछा क्या अभी मथुरा नहीं आया तब लोग ने बताया कि दिल्ली में आ गये हैं । फिर श्री भरत दास जी दूसरी गाडी पकरि कर मथुरा आए । मथुरा से राधा रानी टिर्नि पकड़ कर वृन्दावन पहुंचे । रात्री में एक बजे टिर्क वृन्दावन आया तो

1:55

श्री भरत दास जी अयोध्या पुरी **भाग 17**
कल दोपहर 12:31 देखा गया

श्री फते कृष्ण स्वामी जी को बताया । कि बाबा टिर्क से कूद कर मर गए तब स्वामी जी अपनी मारूती से लेने के लिए चल दिए । इतमे श्री भरत दास जी सुबह स्वामी श्री फते कृष्ण जी के घर पहुंचे । तो श्री फते कृष्ण जी की पत्नी बहुत गुस्सा भई कहा बाबा जी तू टिर्क के साथ क्यों आयो । टिर्नि से क्यों नहीं आयो । टिर्क के साथ आयो तो बालक नि के कहने से क्यों कूदौ । ओर कूदौ तो मरो क्यों नहीं हमें परेशान कर ने आगयो तब माता जी सरुपो को पीटने लगी । तब सरुप पुकारे बाबा बचायो तब श्री भरत दास जी ने कहा माता जी सरुपो को क्यों पीट रही है । बालक नि को पीटने से मेरा कस्ट दूर नहीं होगा ओर बणेगा । उस समय श्री करह विहारी सरकार वृन्दावन धाम करह आश्रम में थे ।महाराज जी के लिए फोन कर दिया गुरु देव भगवान ने मोटरसाईकिल भेजदिया । ओर श्री भरत दास जी को वृन्दावन करह आश्रम में ले गए । महाराज जी ने पूछा अब क्या इच्छा है । श्री भरत दास जी ने कहा महाराज जी आप ही ने कहा है कि रास विहारी के माथे पै मुकुट है । तब तक साछात भगवान है तो साछाति भगवान की सेवा को नहीं छोड़ सकता । तब महाराज जी ने काले बाबू होस्पीटल में भेज दिया । टिर्क से गरने के 48 घंटा बाद माथे में तीन टाके लगे पूरे सरीर मैं चोट लगी थी मल्लम पट्टी हूआ । तीन दिन भरती रहे चोथे दिन करह आश्रम चले आए । साम को श्री फते कृष्ण स्वामी जी महाराज जी के दर्शन के लिए आए । तो महाराज जी से प्रार्थना कीया अब श्री भरत दास जी को रास लीला की सेवा में नहीं रखेंगे महाराज जी ने कुच्छ नहीं कहा । सुबह श्री भरत दास जी ने महाराज जी से प्रार्थना कीया मेरे रास लीला की सेवा में जाइ रहे है । तब महाराज जी मने किया अब ना जाओ तब श्री भरत दास जी बोले भोजन के बिना रहसक्ता हू । लेकिन रास लीला की सेवा के बिना नहीं तब श्री महाराज जी ने । स्वामी जी के लडका राधाकंत के लिए फोन कर दिया श्री भरत दास जी रास लीला की सेवा आइ रहे है । तब राधाकंत स्कूटर से आए और प्रार्थना कीया महाराज जी बाबू जी घर नहीं है आएंगे तो नाराज होंगे । तब महाराज जी ने कहा अगर श्री भरत दास जी रास लीला की । सेवा में जाए तो पुलिस के हवाले कर देना । लेकिन श्री भरत दास जी कहा मन ने बाले थे चलदीए स्वामी जी के घर पहुंचे । तो राधा कंत ने प्रार्थना कीया के पिता जी घर नहीं है नाराज होंगे । तब श्री भरत दास जी ने कहा कोई बात नहीं है मेरे राम गेट पर बैठे जाते हैं । ठाकुर जी निकले गे तो दर्शन करि लेंगे श्री फते कृष्ण स्वामी जी हरिद्धार गए थे । संत माता व्रज देवी के पास लाल प्रेम धन ठाकुर जी माता जी के साथ रहते थे । तो राधाकंत ने फोन किया लाल प्रेम धन ठाकुर जी के लिए तब ठाकुर जी ने कहा श्री भरत दास जी से बात कराइयें । तब ठाकुर जी ने पूछा क्या बात है बाबा तब कहा

ठाकुर जी हम को लीला सरुपो की सेवा से बंन्चित कीया जारा है। तब ठाकुर जी महाराज ने कहा हमारी बात मानों गे तो सब ठीक होजाएगा। श्री भरत दास जी ने कहा सब बात मानेंगे लेकिन आप कहोगे लीला मंडल छोड़ दे तो नहीं माने गे। तब ठाकुर जी ने कहा इस समय आप आश्रम चले जाइए एक तारीख को हम आराह हैं। सब ठीक हो जाएगा तब श्री भरत दास जी राधा वल्लभ रास मंडल आश्रम में चलेगए। भइ पर रहने लगे रास मंडल पर एक तारीख से लीला होने बाली थी इसलिए। एक तारीख से लीला सुरू होगई तो रास लीला की सेवा में पहुंच गए। श्रृंगार के कपडे की तह लगा ना एसी सेवा करने लगे। तीन तारीख को श्री फते कृष्ण स्वामी जी आ गए। तो श्री भरत दास जी से मने किया के लीला की सेवा ना करों। लेकिन श्री भरत दास जी कहा मन ने बाले थे। तब श्री फते कृष्ण स्वामी जी ने अपने लडके राधाकंत को इसारा कीया। के पुलिस बुलाओ तब राधा कंत ने पुलिस बालों को बुला लिया। श्री भरत दास जी को बुलाया और पुलिस बाले बोले बाबा आप इनको क्यों परेशान कर रहे हैं। तब श्री भरत दास जी ने कहा 8 साल से मेरे राम रास लीला की तन मन धन से सेवा कर रहे हैं। होशंगाबाद से टिर्क के साथ आरहे थे रास्ते में टिर्क से कूद दिया। ओर उठाया तक नहीं जंगल में रोड पर छोड़ कर चले आए। तब मेरे राम घर आये तो रहने नहीं दे रहे है तब पुलिस बाले समझ गए बाबा की कोई गलती नहीं है। तब पुलिस बाले श्री भरत दास जी से बोले आप इनके नाम रपोट कर देऊ तब श्री भरत दास जी ने कहा। में अपने ठाकुर जी की रपोट नहीं करूंगा। आप आए हैं मुझे ले चली में कोई कत्ली नहीं हूँ। आप एक दिन छोड़ गे मेरे राम फिर रास लीला की सेवा में ही रहेहूगा तब पुलिस बाले छोड़ कर चले गए। फिर दूसरि से बैठ कर लीला दर्शन करते हुए सीताराम सीताराम के जाप में लगे गए। ओर मौती धागा से हार कंठा बाजू बन्द पोछी। हथ फूल कमर पेटी नथ नासा मणी बना कर रास लीला की सेवा में अर्पण कर दिए। कार्यक्रम के बाद में श्री फते कृष्ण स्वामी जी ने सभी से मने करदिया। अब बाबा को मालूम नहीं पर ना चाहिए के रास लीला मंडल कहा जाराह है। तब श्री भरत दास जी को कोई नहीं बताबै तब श्री राधा रानी के मंदिर के आगे बैठ कर प्रार्थना कीया। के जब तक रास लीला मंडल कहा जाराह मालूम नहीं परेगा तब तक भोजन जल कुछ भी सेवन नहीं करूंगा। तब मन में श्री राधा रानी ने पेरिणा उत्पन्न की के आप स्वामी जी के घर चले जाइए। तब श्री भरत दास जी स्वामी जी के घर के गेट पर पहुंचे। तो दो संत भगवान खडे हुए थे। तब संत भगवान को दंडवत प्रणाम किया तो संत भगवान ने पूछा। श्री फते कृष्ण स्वामी जी कहा है। तब श्री भरत दास जी ने पूछा क्या काम है। तब संत भगवान ने बताया हमारे आश्रम में कार्यक्रम है। रास लीला मंडल को

श्री भरत दास जी अयोध्या पुरी
कल दोपहर 12:31 देखा गया

भाग 19

है । तब संत भगवान ने बताया हमारे आश्रम में कार्यक्रम है। रास लीला मंडल को लेजाने आए है। तब श्री भरत दास जी ने सभी पता लिख बालीया कहा रास लीला मंडल को जाना है। तब श्री भरत दास जी दुसरे दिन वृन्दावन से चलि दिए। रास लीला मंडल के टिर्क से पहले टिर्नि के द्वारा पहुंच गए । शंकर जी के मंदिर में आसन लगाया ओर रास लीला मंडल को कहाँ रुकना है। सब बिबस्था में लग गए रास लीला मंडल आया तो उनके भोजन पानी की सेवा में लग गए। श्री फते कृष्ण स्वामी जी दुसरे दिन आए तो उस दिन हनुमान जी की एसी लीला हूई। के आधी तूफान बारिश आया सभी पन्डाल गिर पडा रास लीला मंडल चौरे खेत में बने पन्डाल में रुके थे। तब श्री भरत दास जी पहुंचे श्रृंगार को भीजने से बचाने के लिए पन्डाल का बांस पकड़ कर खडे रहे। गांव बाले आए तो कहा सभी लोग गांव चले तो श्री फते कृष्ण स्वामी जी ने कहा आप लोग रास लीला सरुपो को ले जाइए। हम तो समाने की सुरक्षा में रहे गे तब श्री भरत दास जी भी स्वामी जी के साथ आधी तूफान एवं वारिश में सामान की सुरक्षा में खड़े थे। तब श्री फते कृष्ण स्वामी जी के हृदय में परिवर्तन हूआ ओर कहाँ महाराज जी आप हमारा ठाकुर बटूआ ले जाइए। ओर श्री लीला सरुपो की सेवा में जाइए। तब श्री भरत दास जी को फिर से श्री रास लीला विहारिणी विहारी जू सरकार की सेवा प्राप्त होगई थी। इस प्रकार से श्री भरत दास जी ने 8 साल श्री फते कृष्ण स्वामी जी के रास लीला मंडल की सेवा कीया। उसे के बाद जितनी रास लीला मंडल हैं वृन्दावन धाम में सभी की सेवा में। मौती धागा से हार कंठा बाजू बन्द पोछी हथ फूल कमर पेटी नथ। नासा मणी बना कर सेवा करते रहें। किसी लीला मंडल में एक महीना किसी में दो महीना। कुछ दिन बाद श्री भरतदास जी ने वृन्दावन धाम में करह आश्रम के श्री मंदिर विहारी ठाकुर जी महाराज के लिए। मौती धागा से हार कंठा बाजू बन्द पोछी कमर पेटी नथ नासा मणी बना कर पहनाया। फिर श्री भरतदास जी करह विहारी सरकार की सेवा में करह धाम चले आए। करह आश्रम में भी श्री विजय राघव सरकार श्री मंदिर विहारी ठाकुर जी के लिए। मौती धागा से हार कंठा बाजू बन्द पोछी कमर पेटी सेहरा बनाकर धारण कराया। श्री गुरु देव भगवान श्री करह विहारी सरकार की सेवा में रहने लगे श्री भरत दास जी इतने चंचल थे । एक महीना से जादा एक जगह नहीं रुकते थे। श्री गुरु देव भगवान से अग्या लेकर चल दिए भिर्मण करने के लिए ग्वालियर की बगल में। एक आश्रम हैं पहाढो के बीच में उस आश्रम में गाजा पीने बाले संत भगवान रहते थे। उनके साथ गाजा भाग पीने लगे नसा में बिहोस पढे रहते। भजन पूजा पाठ सब छूट गया एक दिन साम को बडा दुख हुआ। एसे जीवन से क्या फायदा भगवान से प्रार्थना कीया जय श्री सीताराम भाग 6

दोपहर 1:51

जय श्री सीताराम भाग 7 श्री भरत दास जी ने सपने ने में श्री मन नारायण दास भक्त माली मामा जी के दर्शन त्रिवेणी संगम प्रयाग राज में कीए । श्री महाराज जी के तीन नेत्र के दर्शन हुए मानों शंकर जी के अन्सा अवतार हो । सुबह उठते ही सपने को याद किया तो भक्त माली जी का निर्णय पत्र था झोली में से निकार के देखा तो उस समय व्रज मंडल कोसीकलां में कथा चल रही थी जल्दी स्नान ध्यान करके चल दिए । ग्वालियर से टिर्नि पकड़ा कोसीकलां में उतरा साम को श्री मन नारायण दास भक्त माली मामा जी के पास पहुँच गया उसी दिन से भाग गाजा बी डी सिकरेट सभी नसा त्याग दिया । कथा सुनने में बहुत आनन्द आया कार्यक्रम के बाद श्री महाराज जी के साथ ही चल दिया बारा महीना कथा चलती रहती थी कासी संकट मोचन हनुमान जी के मंदिर में कथा हूई । गंगा मईया का स्नान कासी पुरी में निवास कथा सुनते हुए सीताराम सीताराम का जाप करते हूए अबरल आसू की धार चलती थी कासी से राम नगर होते हूए सिद्ध आश्रम बक्सर महाराज के आश्रम में एक दो दिन रुके । फिर पटना में रुके उसके बाद श्री जानकी नवमी को सीता मढी में चंद्रकला बहन जी की छत्रछाया में श्री जानकी नवमी को सीता जी के प्राकटय महोत्सव का आनन्द लीया । सीता मढी की कौमल भूमि एसी है हाथ साफ करों तो महसूस होता है के माखन से हाथ धो रहे है चंपा के पुष्पों की दिव्य सुगंध फलती रहती हैं सीता मढी से जनक पुर धाम पहुंचे तो । श्री भरत दास जी को एसा महसूस हूआ के पहले किसी जन्म में श्री जनक पुर धाम में जन्म हुआ हो अपनी जन्म भूमि जैसी लग रही थी विहर कुंड पर जुगल विनोद कुंज में । श्री राम दुलारी शरण जी महाराज के आश्रम में रुके थे श्री जनक पुर धाम में अनेक कुंड हैं। सपेत भुमि है जनक पुर धाम की बगल में दूधमती नदी बहती है श्री सीता जी का जन्म हुआ था प्रथिवी से तब सुनेना मईया की छाती में दूध नहीं था तो श्री दूधमती नदी ने । प्रगट होकर सीता जी को दूध पिलाया था जनक पुर धाम से गोरखपुर गीता वाटिका में श्री भक्त माली जी की कथा हुई ।थी गीता वाटिका का एक दिव्य स्थल हैं इस कलजुग में अंगिरा ऋृशी देव ऋृशी नारद जी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार से सत्संग करने आते थे । श्री भरत दास जी को जो आनन्द गीता वाटिका में बैठ कर श्री मन नारायण दास भक्त माली मामा जी की कथा सुनने में आनन्द आया बैसा आनन्द जीवन में कभी नहीं आया गदगद कंठ से । सीताराम सीताराम जाप करते हुए सरीर पुलकित होता था गीता वाटिका से श्रृंगार रस के ग्रंथ लिए महाभाव दिन मणी श्री राधा बाबा । के नाम से हनुमान प्रसाद पोद्दार जी एवं राधा बाबा का जीवन चरित था एक ग्रंथ का नाम था सखी हौतो श्याम के रंग रगी एवं । केलिकुंज पडने में बहुत आनन्द आता था श्री भक्त माली जी की सेवा में श्री

9:08

श्री भरत दास जी अयोध्या पुरी **भाग 21**

मोहन दास एवं मदन बाबा श्री भरत दास जी ओर कई । महात्मा कार्यक्रम में पधार ते थे फिर कानपुर में हूई बिठूर भक्त ध्रुव की राजधानी स्थल गंगा के किनारे दर्शन किये फिर हापुढ में हूइ । फिर गंगा तट सुकताल में जाहा सुखदेव जी ने राजा परीक्षित को भागवत कथा सुनाई थी जहाँ 72 फुट ऊंची हनुमान जी की मूर्ति है । फिर रोहतक में हूई फिर ऋषीकैश गीता भवन में गंगा के किनारे कथा हूई ऋषीकेश में गंगा जी का निरमल जल बहता है। श्री भरत दास जी को बहुत आनन्द आया । उस समय श्री स्वामी राम । सुखदास जी महाराज विराजमान थे उनके भी प्रवचन होते थे फिर बरसाने में श्री भक्त माल की कथा हुई थी फिर वृन्दावन धाम सुदामा खुटी में जगत गुरु रामानन्दाचार्य जी की जयंती महोत्सव हूआ जगह । जगह कथा का आनन्द लेते हुए चैत राम नवमी के समय अयोध्या पुरी पहुंचे छोटी छावनी में भक्त माल की कथा चल रही थी एक दिन विहूती भवन में श्री राम जी की बधाई दर्शन करने गए थे मधुर मधुर । श्री सीताराम जी के लीला विहारी सरकार विराजमान थे श्री भरत दास जी ने दर्शन किये एक टक देख तेही रहे हाथ में पंखा था तो श्री लीला विहारिणी विहारी जू सरकार की हबा करने लगे तब श्री राम जी ने मना किया तो बैठ गये तब श्री किशोरी जी इसारा कीया के । हबा कीजिए बधाई के बाद आरती होई श्री किशोरी जी को गोद में लेकर श्रृंगार कुंज में पहुंचे तब श्रृंगारी जी ने कहा महत्मा जी बाहार जाइए ठाकुर जी का श्रृंगार उतार ना है तो श्रृंगार कुंज के बाहर गेट । पर बैठगए तब गेट खोला तो अन्दर जाकर बैठ गए थोडी देर में एक संत भगवान सरुप सरकार के लिए भोग लेकर आए तो श्रृंगारी जी ने कहा महत्मा जी बाहार जाइए ठाकुर जी भोजन पाएगें तब । श्री भरत दास जी नीचे जग मोहन में बैठ गए मन ही मन सोच रहे थे क्या सरुप सरकारों की सीत प्रसादी पाने को मिलेगी एसा चिन्तन । करते हुए सीताराम सीताराम जाप करते रहे थोड़ी देर में श्री किशोरी जी के सरुप ने श्रृंगारी जी से कहा महत्मा जी नीचे बैठ हैं । प्रसाद पाने के लिए बुला लीजीए तब श्रृंगारी जी ने बुलाया सरुप सरकारों की थाली में भर पेट प्रसाद पाया आचमन कर ने के बाद । श्री राम जी किशोरी जी की चरण सेवा करने लगे तब सरकारों से पूछा क्या आप बारा महीना हेइ रहते है तब बताया पाँच साल के । बालक ने को पंच संसकार करि के 17 साल तक सरुप बना कर रखते हैं घर नहीं जाने देते है अगर माता पिता को मिलना है तो । श्रृंगार कुंज में आकर मिलते हैं मास्टर श्रृंगार कुंज में ही पढाने आते है आश्रम का नेम हैं के भंडारा बनने के बाद एक थाल मंदिर विहारी का निकलता है एक थाल लीला विहारी का श्री सरुप सरकार पाए । लेते है तब संत भगवान की पतंग होती हैं श्री महंत बैजनाथ शरण जी महाराज भक्तों के। हिआ यात्रा करते हैं तो सरुप सरकारों को साथ में अपनी

मार्सल से लेकर जाति हैं जगह जगह भक्तों के गांव । एवं सहरो में राम अर्चा कही सीताराम विवाह कही झूलन महोत्सव कहीं श्री राम कलेवा इस प्रकार पुरी यात्रा में चलता रहता है तब । श्री भरत दास जी ने कहा क्या मेरे राम चल सकते है आप लोगों की यात्रा में तब कहा महाराज जी से पूछा लीजीए तब श्री बैजनाथ शरण जी महाराज से पूछा क्या मेरे राम यात्रा में चल सकते हैं तब । बताया मार्सल में तो जगह नहीं है आप अलग से टिर्नि यआ बस से चल सकते तब पूरी यात्रा का पता लिखबा लीया कहा कहाँ । कार्यक्रम होना है उसे के बाद दंडवत प्रणाम करके श्री मन नारायण दास भक्त माली मामा जी के पास पहुँचे तो बताया कि विहूती भवन । के सरुप सरकार श्री राम जी ने मेरा मन चुरा लीया तब भक्त माली जी ने कहा जायो सेवा में। ओर श्री राम जी से कह देना । हमारा भी मन चुराले तब श्री भरत दास जी विहूती भवन लीला विहारिणी विहारी जू सरकार की सेवा में पहुंच गए श्रृंगार कुंज में । झाड़ू पोछा लगाते सरुप सरकारों को स्नान कुंज में स्नान करते सेपू साबुन से फिर तेल मालिश करते श्रृंगार कुंज में आकर श्री राम जी । किशोरी जी अपने कैस समारते तिलक लगा कर गुरु मंत्र का जाप करते तब दही चूडा भूरे का बाल भोग पाते उस के बाद पढाई करते करिब 11 बजे श्री भरत दास जी श्री राम जी किशोरी जी के लिए । भंडारे से भोग लेकर आते तब श्री राम जी किशोरी जी एक ही थाल में आमने सामने बैठ कर भोग आरोग ते उस के बाद आचमन कराते तोलीया से हाथ मुख पौंछते तब श्रृंगारी जी एवं श्री भरत दास जी । ठाकुर जी का सीत प्रसादी पाते फिर श्री राम जी किशोरी जी दिबस सयन करते थे श्री भरत दास जी चरणों की सेवा करते थे फिर 4 बजे जागते थे उसके बाद कुल्ला आचमन कराते फिर चाहि नास्ता । बिस्कुट नमकीन रस गुल्ला रबडी इस प्रकार अनेक पदार्थ पबाते साम के समय बाहर छति पर घूमने जाते तो श्री भरत दास जी अंग । रछक बन कर सेवा में खड़े रहते थे कहीं बंदर ना झपट पर फिर साम को बिआरू का थाल लेकर आते श्री राम जी किशोरी जी को पबाने के बाद में श्रृंगारी जी एवं श्री भरत दास जी बियारू करते । रात्री में श्री राम जी किशोरी जी एक ही पलंग पर सयन करते थे श्री भरत दास जी ने मछरदानी लगा कर श्री राम जी किशोरी जी दोनों प्रिया प्रितम को सयन कराया फिर बैठ कर चरणों की सेवा करते रहें । जब सरकार लोग सयन कर गएँ तब श्री भरत दास जी श्रृंगार कुंज की गेट के आगे सयन करते थे सुबह 4 बजे उठ कर ढोल ढाल होने के बाद मंजन करने के बाद स्नान करने के बाद सरजू में स्नान कर ने जाते थे सरयू स्नान कर के आश्रम आकर तिलक चंदन लगा कर श्री गुरु मंत्र एवं श्री राम मंत्र का जाप करते नित्य नियम करने के बाद । श्रृंगार कुंज में धीरे-धीरे श्री राम जी श्री किशोरी जी के चरणों को सहलाते तब सुबह श्री राम जी

किशोरी जी जागते आलस के कारण जमुहाई लेते तो श्री भरत दास जी चुटकी बजाते धीरे-धीरे निंद्रा दूर । होने के बाद कुल्ला आचमन कराते फिर जल पिलाते स्नान करने लेजाते इसी प्रकार श्री भरत दास जी लीला विहारिणी विहारी जू सरकार की अष्टयाम सेवा करते थे कुच्छ दिन बाद यात्रा सुरू होई । सरकार लोग मार्सल से चलते श्री भरत दास जी टिर्नि इआ बस ते यात्रा करते पटना एवं नबादा जिला में टेऊस जज साहब के घर पर । एवं जहानाबाद में ओर कई गांव में कार्यक्रम करते हुए सीता मढी के आगे ललन श्रृंगारी जी के गांव पंथपाखर में श्री सीताराम विवाह महोत्सव हूआ गर्मी का समय था श्री भरत दास जी पंखा से हबा । करते थे श्री बैजनाथ शरण जी महाराज पंखा सखी कहते थे श्री भरत दास जी को श्री राम जी श्री किशोरी जी सिया राम बाबा कहते थे कार्यक्रम के बाद श्री राम जी सरकार बोले सिया राम बाबा आप । अयोध्या निवास कीजिए हमारे साथ आपको बहुत कष्ट उठाना पडेगा तब श्री भरत दास जी ने कहा जो कष्ट आएगा सहन करूगा लेकिन आप लोगों का साथ नहीं छोड़ गे फिर श्री राम जी महाराज । ने कहा आप सभी जगह जाए लेकिन दिल्ली नहीं जाना एक महीना पहले श्री राम जी महाराज ने भविष्यवाणी किया क्यों के श्री राम जी महाराज जानते थे कि श्री भरत दास जी के साथ क्या होगा । लेकिन श्री भरत दास जी सदा से जिद्द है फिर पंथपाखर से रघुनाथ पुर गए श्री भरत दास जी टिर्नि एवं बस पकड़ कर पहले ही पहुंच । गए रघुनाथ पुर पहुंच तेही जोर का भूखार चण बैठा माथे में जोर का दर्द होरहा था लेकिन श्री भरत दास जी ने आकर स्नान ध्यान पूछा पाट कीया तब तक सरकार लोग आ गए जहां जहाँ सरकार लोगों । का कार्यक्रम होता हैं उन सभी जगह ने पर लीला विहारी सरकार की श्रृंगार कुंज बनी है तो श्री भरत दास जी श्रृंगार कुंज के आगे । अपना आसन लगाया ओर भुखार चणा हैं किसी को नहीं बताया नहीं तो कहगे हमनें पहले मना किया तब सरकार लोग भोजन पाए । मिथिला आँचल में दूल्हा दुलहन श्री सीताराम जू सरकार की अनेक प्रकार के बिअन्जन बना कर पबाते हैं उस के बाद श्री भरत दास जी को सरकारों का प्रसाद पाने के लिए बुला लिया तो भुखार । में ओर दिन से ज्यादा पाये आचमन कर के श्री राम जी श्री किशोरी जी की चरण सेवा करने लगे तब तक सरकारों को नींद आ गई तो श्री भरत दास जी श्रृंगार कुंज के आगे लैट गए थोडी देर बाद लाइट । चली गई तो श्री भरत दास जी ने सोचा के सरकारों की गर्मी लगने से नींद खोल जाएगी तो पंखा लेकर हबा करने लगे मन ही मन में चिन्तन चल रहा है विहूती भवन अयोध्या पुरी में पहले एक श्री सीता जी के लीला सरुप थे उनको पाँच साल की अवस्था में श्री । सीता जी का आभेस आ गया था तो एक आन्त में स्नान करते छाती कभी खली नहीं रखती थी लोग पूछते क्या आप

लडकी है तो कहते लडकी क्या होती है में मिथिला की राजकुमारी हू अपने भक्तों को । सुख देने के लिए। साकेत धाम से आई हू जबतक हमारा श्रृंगार रहेगा तभी तक रहे गे उस के बाद सरीर छोड़ कर साकेत धाम चली जाएगी एसा पहले ही बता दिया था लोग उस बात को भूल गए थे । 17 साल के होगए तो मौछ डाणी आने लगी तो सोचा इनका श्रृंगार बिसरजन कर दिया जाए और दूसरे सरुप बनाया जाए उनको लोग श्री सिद्ध किशोरी जी के नाम से पुकारते थे केसी भी बीमारी होती । अपने हाथ से एक लौंग खिला कर ठीक कर देती थी केसा भी गरीब है अपने हाथ से एक प्रसादी कपड़ा देकर मालामाल कर देती थी अनेकों संत भगवान के हृदय की बात बताई इसलिए सभी लोग श्री । सिद्ध किशोरी जी के नाम से पुकारते थे जब 17 साल की उम्र होगई तब छोटे बालक नि की प्राण प्रतिष्ठा चल रही थी उसी समय श्री सिद्ध किशोरी जी ने जिस रूम रहती थी उसको गऊ के गोबर से । लीपा ओर कुसा बिछाकर सो गई अन्दर से कुन्दी खोल दी आश्रम के संत भगवान ने सोचा अब श्री सिद्ध किशोरी जी का श्रृंगार । बिसरजन कर दिया जाए जाओ श्री सिद्ध किशोरी जी को लेकर आओ तो रूम के अंदर गए तो देखा श्री सिद्ध किशोरी जी ने तो । सरीर छोड़ दिया है (श्री सिद्ध किशोरी चरिता अमृत सागर) मिलता है विहूती भवन अयोध्या पुरी में फिरी में बतरण कीया जाता 109 चमत्कार है लिखे हैं उस के अन्दर तो श्री भरत दास जी ने सरकारों की हबा करते हुए प्रार्थना कीया के श्री सिद्ध किशोरी जी आप इन । लीला सरुप के अन्दर आप हीं हैं क्या मेरे उपर कृपा नहीं करौगी बस इतनी प्रार्थना करते हीं रौंगटे खड़े होगए नेत्रों से असू निकले । एक छण के अन्दर में कहाँ भूखार माथे का दर्द गाइब होगया । कार्यक्रम के बाद अयोध्या पुरी आ गए कुछ दिन विहूती भवन में श्री दूल्हा दुलहन श्री सीताराम जू सरकार की प्रतिक्ष अष्टयाम सेवा । करते रहें कुछ दिन बाद दिल्ली की यात्रा सुरू भई तो श्री भरत दास जी से श्री बैजनाथ शरण जी महाराज ने मने किया के आप दिल्ली ना । जाइए दिल्ली में उस भक्त के घर अधिक जगह नहीं थी इसलिए । मने किया तो श्री भरत दास जी मान गए जब सरकार लोग चले गए तो श्री भरत दास जी को बेचैनी बड गई ना भोजन करना ना जल पीना बस बैठ कर रोना सुरू करदिया तब आश्रम के संत । भगवान से पूछा महाराज जी दिल्ली में कहाँ गए तब सही पता किसी को मालूम नहीं था केबल इतना मालूम हुआ कि दिल्ली के । अन्दर जनक पुरी महोल्ला में कार्यक्रम है तब श्री भरत दास जी । चल दिए साम को अयोध्या पुरी से दिल्ली के लिए टिर्नि पकड़ा सुबह दिल्ली पहुंच गया बस पकड़ कर जनक पुरी महोल्ला पहुंचा लेकिन । जनक पुरी महोल्ला इतना बड़ा है कोई नहीं बताबै खोज ते खोज ते 12 बजे गए लेकिन किसी ने नहीं पता बताया तब एक आश्रम में । भगवान

श्री भरत दास जी अयोध्या पुरी **भाग 25**

श्री सीताराम जू सरकार के मंदिर के आगे बैठ कर प्रार्थना कीया के जब तक पता नहीं मिलेगा तब तक भोजन जल कुछ भी । सेवन नहीं करूंगा तब मंदिर के पुजारी महाराज आए पूछा महाराज कहा से आए हैं तो श्री भरत दास जी ने कहा अयोध्या पुरी से । अयोध्या पुरी से 12 संत भगवान पधारे हैं साथ में लीला सरुप है । जनक पुरी महोल्ला में श्री सीताराम विवाह महोत्सव है उसी । कार्यक्रम में मेरे राम आए हैं लेकिन उनका कहीं पता ठिकाना । मालूम नहीं है तब श्री पुजारी महाराज ने कहा अयोध्या बाले । महाराज तो हमारे जजमान के घर आये हैं तब श्री पुजारी जी से पता । पूछ कर जहाँ सरकार लोग रुके थे तह पर श्री भरत दास जी पहुच गए श्रृंगार कुंज में जाकर दंडवत प्रणाम किया श्री राम जी किशोरी । जी के चरणों को छूआ तब श्रृंगारी जी ने कहा कि सुबह आप के श्री राम जी ने कहा के आज दिल्ली में सिया राम बाबा आए हैं श्री । बैजनाथ शरण जी महाराज को दंडवत कीया तब महाराज जी ने भोजन पाने के लिए भेज दिया भोजन पाकर बापिस आए तब ।श्री बैजनाथ शरण जी महाराज ने कहा आप से मने किया फिर आप क्यों आए श्री भरत दास जी ने कहा अयोध्या जी में भोजन पानी सब छूट गया जीना मुश्किल होरहा था इसीलिए आए । बस श्री बैजनाथ शरण जी महाराज उदास होगए जब महाराज जी उदास । हूए तो सभी लोग उदास होगए तब श्री भरत दास जी को बहुत दुख हुआ श्री राम जी के चरणों में बैठ कर रोने लगे ओर प्रार्थना कीया के । आप ने मेरा मन चुरा लीया है मेरे मन को बापस करि दीजीए तब श्री राम जी श्री किशोरी जी के चरणों को छू कर रोते हुए दिल्ली से । चल दिए टिर्नि पकड़ कर दुसरे दिन 12 बजे पटना विहार में पहुंचे पटना में श्री मन नारायण दास भक्त माली मामा जी की कथा चल । रही थी दिल्ली से पटना 18 घंटा में पहुंचे भोजन पानी कुछ सेवन नहीं कीया तब श्री भक्त माली जी महाराज के चरणों में बैठ कर रोने । लगे थोडी देर में सरीर मैं बिहोसी आना सूरू होगई स्नान घर में नल के नीचे बैठा दिया पानी ऊपर से गिर रहा है फिर भी कोई होस । नहीं आया तब कदकूआ में नागा बाबा ठाकुर बाडी में ले गए खुली हवा में बैठा दिया ओषधि खिलाते रहे तब 6 घंटा बाद होस । आया पटना के कार्यक्रम के बाद अयोध्या पुरी छोटी छावनी में भक्त माल की कथा चल रही थी एक दिन साम को 4 बजे जटायु की । कथा चल रही थी ओर श्री भरत दास जी को बिहोसी आना सूरू । हूआ तब श्री भरत दास जी ने बाल्मीकि भवन की बगल में जल मंदिर के उदान में अशोक के पेड़ से पीठि अडा कर पद्म आसन से । बैठ गए मन में आया के सरीर छूट ने बाला हैं सीताराम सीताराम का जाप चलराह था नेत्रों से आसू की धार चल रही थी बैठे हुए बिहोस । होगए पुरी रात्री बीत गई दूसरे दिन सुबह 8 बजे होस आया तो । संवरी की कथा चल रही थी

9:10

श्री भरत दास जी अयोध्या पुरी भाग 26

श्री भरत दास जी को अचम्भा जैसा लगा 16 घंटा के बाद एसा महसूस हूआ के दो मिनट हूआ है श्री । जगमोहन दास जी महाराज सेवा थे उनसे पूछा अभी दो मिनट पहले । जटायु की कथा चल रही थी हालई संवरी मईया की कथा कैसे । चलने लगी ओर सूर्य नारायण पछिम में अस्ताल को जा रहे इतने जल्दी पूर्व में कैसे आ गए तब श्री जगमोहन दास जी महाराज ने कहा आप काल से बिहोस थे अभी होस में आए हैं तब श्री मन । नारायण दास भक्त माली मामा जी ने कहा श्री भरत दास जी आप का स्वास्थ ठीक नहीं है अपने गुरु आश्रम करह धाम चले जाइए तब । श्री भरत दास जी अयोध्या में ही श्री राम हर्षण कुंज चले गए तब पंगति में श्री महंत हरी दास जी महाराज ने कहा श्री भरत दास जी । चाबल कम पाना आप का स्वास्थ्य ठीक नहीं तब श्री भरत दास जी ने कहा गर्मी उंची होगई है किशोरी जी का महा प्रसाद पाएगें तो । ठीक होजाएगे तब श्री किशोरी जी की कृपा से ठीक होगये श्री भरत दास जी कुछ दिन बाद एक मुरैना जिला बिजय पुर के संत । भगवान के साथ जरासंध की राजधानी राजगिरीब का मेला देखने चलदीए सीवान छपरा होते हूए हाजीपुर में नारायणी गंडिकी नदी में । स्नान कीए किनारे में एक आश्रम में अपने हाथ से रसोई सिद्धि की साथ में श्री सालिका राम भगवान जी थे श्री ठाकुर का भोग लगाया सभी संत भगवान पाए हाजीपुर से मुजफ्फर पुर पहुंचे सहर में । विहूती भवन विहारिणी विहारी जू सरकार के द्वारा श्री सीताराम विवाह चलराह था तो ओर संत भगवान राजगीरिब के लिए । चले गए श्री भरत दास जी श्री सीताराम विवाह दर्शन करने कार्यक्रम स्थल पर पहुंच गए श्री बैजनाथ शरण जी को दंडवत कीया ओर कहाँ महाराज जी भिर्मण करते हुए राजगीरिब जारहे थे लेकिन रस्ता में श्री सीताराम विवाह चलराह था इसीलिए इधर आ गए हैं अगर आप की इच्छा हो तो । श्री सीताराम विवाह महोत्सव दर्शन करिलेगे आप की इच्छा नहीं है तो बापिस चलेजाएगे तब श्री महाराज जी ने कहा अब आ गए हैं तो। श्री सीताराम विवाह महोत्सव दर्शन करि के जाइए श्री राम जी श्री किशोरी जी की सेवा में पहुंचे पंखा सखी ने दूल्हा दुलहन श्री सीताराम जू सरकार का पंखा से हबा करते हुए श्री सीताराम विवाह । का आनन्द लीया कार्यक्रम के बाद में श्री बैजनाथ शरण जी महाराज से पूछा अयोध्या पुरी विहूती भवन में रहस्कते है तब श्री महाराज ने कहा विहूती भवन संत भगवान की सेवा केलिए बना है । आराम से रहीए तब श्री भरत दास जी से श्री राम जी महाराज ने कहा सीया राम जी आप अयोध्या निवास कीजिए तब श्री भरत दास जी ने कहा सरकार एक महीना से जादा एक जगह नहीं रूक पाते हैं। तब श्री राम जी ने कहा जब आप का मन उचिटे तब सरजू के किनारे बैठ कर सीताराम सीताराम जाप करना आप का मन शांत हो जाएगा जय श्री सीताराम भाग 7

श्री भरत दास जी अयोध्या पुरी
कल दोपहर 2:15 देखा गया

भाग 27

भाग 8 जय श्री सीताराम श्री भरतदास जी जब लीला विहारी सरुप की सेवा में रहते तो कछु कम नियम टेम करते थे । जब लीला की सेवा से बिलग होजाते तो दिनौ राति भजन करते भिर्मण करते हुए जहाँ रुकते तह स्नान तिलक चंदन करि के भजन करने बैठ जाते तो पहले 1 माला गुरु मंत्र की11 माला शरणा गति मंत्र की 6000 हजार श्री राम मंत्र राज का जाप 1 माला श्री शंकर जी के पंचाछरी मंत्र की 7 पाट हनुमान चालीसा 11 पद विनय-पत्रिका के । एक नवा पारायण श्री राम चरित मानस का 25 हजार सीताराम नाम जाप करने के बाद आसन से उठते । उस समय जवान सरीर था एक आसान से बैठ ने में कोई तकलीफ नहीं होती । बडी जटा थी कमर तक लंमी जो बर का दूध लगा कर बनाइ । डाई किलो का चिमटा था । लोकी का तूमा पात्र था जिसे ब्रह्म पात्र कहते हैं । सरीर पर दो लंगोटी दो अचला एक गरम चादर आसन के लिए कंबल पैरौ में जूता चपल नहीं पैहते थे एक झोली रखते जिस में तिलक चंदन दर्पण रहता था। रात्री में टिर्नि से यात्रा करते थे जहाँ सुबह होजाता तह उत्तर कर किसी आश्रम के मालिक से पूछ कर सोचालय स्नान करके भजन करने बैठ जाते आश्रम में जबतक भोजन प्रसाद की घंटी बजती । तब तक मंत्र जप हनुमान चालीसा विनय-पत्रिका का पाठ करिलेते भोजन प्रसाद पाने के बाद थोड़ा विश्राम करने के बाद स्नान तिलक करिके श्री राम चरित मानस का पाठ सीताराम नाम का जाप चलता रहता साम तक । इस प्रकार श्री भरत दास जी ने 20 बर्ष भारत के तीर्थों का भिर्मण कीया। एक बार भिर्मण करते हुए श्री करह धाम पहुंचे श्री गुरु देव भगवान ने कहा श्री भरत दास जी से आप को किसी आश्रम का महंत बना दे तो आश्रम समारौगे । तब कहा जहाँ बारा महीना लीला चलती रहे एसी जगह रहस्कता हू तब श्री गुरु देव भगवान ने कहा अयोध्या पुरी श्री राम हर्षण कुंज में आपको लीला की सेवा मिलेगी ओर सत्संग मिलेगा जाकर रहौ तब श्री भरत दास जी ने सोचा एक बार द्वारिका पुरी की यात्रा करि के फिर अयोध्या पुरी में निवास करेगें श्री गुरु देव भगवान से अग्या लेकर द्वारिका पुरी की यात्रा पर चलदीए करह धाम से भिर्मण करते हुए ग्वालियर झांसी भोपाल सहढोल नागपुर जबलपुर महाराष्ट्र सूरति अमदावाद में जगन्नाथा मंदिर में पहुंचे जाहा पर सुबह सबा मन आटे के मालपूआ का रोज जगन्नाथ भगवान को भोग लगता है उस के बाद संत भगवान को बाल भोग में बतरण कीया जाता है श्री भरत दास जी कुछ दिन श्री जगन्नाथ भगवान के मंदिर में । निवास कीए फिर ओर आगे चलदीए जामनगर में श्री प्रेमभिछू जी महाराज के आश्रम में पहुंचे जहां श्री राम जय राम जय जय राम का अखंड कीर्तन चलता रहता है सोचालय स्नान के बाद तिलक चंदन । नित्य नियम करने के बाद प्रसाद पाया फिर आगे चलदीए भक्त नरसी मेहता

के नगर जूनागढ़ में पहुंचे एक जूनागढ़ के स्वामी जी । करह धाम सिय पिय मिलन महोत्सव में प्रवचन करने आते थे तो उनके आश्रम में रुके नित्य नियम भोजन प्रसाद करने के बाद । जूनागढ़ के कई मंदिरों के दर्शन किये फिर आगे चलदीए गिरनार पर्वत पर चडना सुरू कीया आदे पर्वत की चढाई में एक आश्रम में । रुके दूसरे दिन स्नान ध्यान नित्य नियम करिके भोजन प्रसाद पाने के बाद फिर पर्वत पर चडना सुरू कीया कमंडल कुंड पहुंचे भाह पर । प्रयाद पाया फिर पर्वत पर ओर कई साधू महात्मा ने के आश्रमों में ।।दरष परष मंजन पाना । हरहि पाप कहिं वेद पुराना ।। करते हुए भिर्मण कीया कई दिन के बाद फिर पर्वत से नीचे आए फिर गिरनार पर्वत की परिक्रमा में कई दिनों तक साधु महत्मा ने के अनेक । आश्रमों में रोकते हुए । नित्य नियम भजन एवं भोजन प्रसाद पाते हुए भिर्मण करते हुए परिक्रमा पूरी कीया फिर गुजरात भिर्मण करते हुए सोमनाथ समुद्र के किनारे पहुंचे दर्शन किये भोजन प्रसाद पाए । फिर प्रवाष छेत्र में गए जहां से श्री कृष्ण भगवान ने मिर्तू लोक को छोड़ कर नित्य धाम गोलोक की यात्रा कीये जहाँ पर दो दिन रुके । फिर भिर्मण करते हुए । पोरबंदर एवं सुदामा पुरी समुद्र के किनारे है पहले इसका नाम पोरबंदर था बाद में सुदामा पुरी पड गया । सुदामा जी इसी नगर के थे एवं इसी नगर के महात्मा गांधी जी थे इसी नगर के रमेश भाई ओझा जी है तब श्री भरत दास जी एक । आश्रम में पहुंचे जिस में कोई महात्मा नहीं रहते थे भक्त लोग बताए कि महाराज जी सभी सामग्री रखी है भोजन प्रसाद बनाने की अपने । हाथ से भोजन प्रसाद बना कर पाइए तब श्री भरत दास जी ने स्नान कीया तिलक चंदन नित्य नियम करने के बाद रसोई सिद्धि की अपने सालिका राम भगवान का भोग लगाया तब तक एक संत । भगवान ओर आ गये दोनों बैठ कर प्रसाद पाए भक्त लोग कुछ भेंट दछिण दिए गुजरात धार्मिक देश है साधू महात्मा की बहुत सेवा । करते हैं अगर किसी भक्त को रास्ता में भी कोई साधू महात्मा मिल जाए तो भेंट दछिण दिए बिगर जाने नहीं देते है फिर श्री भरत दास । जी आगे चलदीए मूल द्वारिका दर्शन करते हुए गौमती द्वारिका पहुंचे गौमती नदी में स्नान कीए फिर द्वारिकाधीश के दर्शन किये श्री द्वारिकाधीश मंदिर के आगे श्री प्रेमभिछू जी महाराज के द्वारा । अखंड श्री राम जय राम जय जय राम का कीर्तन चलता रहता है श्री भरत दास जी को द्वारिकाधीश मंदिर के गोस्वामी जी श्री । द्वारिकाधीश का प्रसाद पवाए एसे पतले फुलक जीवन में पहली बार पाए फिर एक आश्रम में जाकर रुके उसी समय श्री रमेश भाई । ओझा जी की भागवत कथा चल रही थी द्वारिका पुरी में 7 दिन तक श्री भरत दास जी ने कथा का आनन्द लीया फिर आगे चलदीए । नागेश्वर महादेव के दर्शन किये आगे गोपी तलाव पहुंचे जहां भगवान श्री कृष्ण के धाम गवन के बाद कृष्ण बिरनी गोपी ने

अपनी देह छोडी थी वृन्दावन के संत भगवान गोपी चंदन लगाते हैं बो गोपी । चंदन इसी गोपी तलाव की मिट्टी है गोपी तलाव के आसपास नबक की खेती होती हैं समुद्र का खारा पानी खेत में भर दिया जाता हैं । एक महीना में सूख जाता टेकटर से जोत कर समेटे कर टिरोली में भरकर फैक्टरी में साफ कीया जाता है श्री भरत दास जी गोपी । तलाव में एक दिन रुके सभी जगह दर्शन किये फिर भेट द्वारिका के लिए चल दिए जो समुद्र के बीच में टापू पर बसी है बहुत बडे स्टीमर से पार हूए तब जाकर दर्शन किये एक आश्रम में रुके 5 दिन के । अंदर में टापू पर जितने दर्शनीय स्थल थे सभी के दर्शन किये फिर श्री भरत दास जी चलदीए भिर्मण करते हुए डाकौर आए डाकौर के । एक भक्त रामदास जी हर एकादशी को द्वारिका पुरी द्वारिकाधीश के दर्शन करने जाते थे एक दिन द्वारिकाधीश ने प्रगट होकर भक्त । रामदास जी को दर्शन दिए और कहा आप बहुत बिर्ध होगए है अब नहीं आया करो तो भक्त रामदास जी ने कहा जब तक जीवन है । दर्शन के बिगर नहीं रहस्कता हू तब श्री द्वारिका धीश ने कहा अबकी बार आप आऔ तो बैलगाड़ी लेकर आना हम आप के गांव में चलेंगे । और रात्री में मंदिर के पीछे बैलगाड़ी लगा देना तब भक्त रामदास जी ने एसा ही कीया दुसरी बार बैलगाड़ी लेकर आएं रात्री में । द्वारिकाधीश ने सब सोने चाँदी के गहने पहने और भक्त रामदास जी की गाड़ी बैठ कर चलदीए सुबह पुजारी जी ने मंदिर खोला तो । भगवान गाइव तब पुजारी जी ने मंदिर के गोस्वामी जी को बताया तो बिचार कीया भगवान को कौन लेजा सकता है तब किसी ने । बताया कि डाकौर का भक्त रामदास जी कल बैलगाड़ीा लेकर आया था तब सभी को बिसवास होगया भगवान को बही चुरालेगया । सब लोग दौडे बैंत लेकर रास्ते में जैसे ही पंडो को आते देखा तो ठाकुर जी ने कहा मुझे बाबई में छोपा दो उस बाबई में पानी नहीं था । जादा गैरी नहीं थी भक्त रामदास जी एसा ही कीया तब पंडो ने गेरलीया भक्त रामदास को बैतौ से पीठा और ठाकुर जी को खौजने लगे तो ठाकुर जी मिल गए बापिस लेजाने के लिए भगवान को । उठाया तो भगवान नहीं उठे तब भगवान के सभी गेने पंडा पुजारी उतार के ले गए तब भक्त रामदास जी ठाकुर जी को बैलगाड़ी में । बैठा कर अपने घर ले गया और भगवान ने भक्त से कहा पंडा लोग आबै तो कह देना भगवान के बराबर सोना तौल कर ले जाइए तब । भक्त ने कहा भगवान से मेरे पास इतना सोना नहीं है तब भगवान ने कहा हम तो एक आन भर जो अपकी पत्नी की नथ है उसी से तुल । जाएंगे फिर पंडा पुजारी गोस्वामी लोग आए तो कहा भगवान को बापिस करदो तब भक्त राम दास जी ने कहा भगवान अपनी इच्छा । से आए हैं भगवान आप लोगों के साथ नहीं जाना चहते हैं अगर भगवान के बदले में आप लोगों को भगवान के बराबर सौना चाहिए । तो हम से

ले जाइए पंडा लोग लोभ में आ गए के इतने सोने से अनेक मूर्ति आ जाएगी तब कहा ठीक है भगवान के बराबर तौल । कर सोना देने के बाद भगवान आप के होजाएगे तब धर्म काँटा मगबाया और एक तरफ भगवान को बैठा दिया दूसरी तरफ भक्त । रामदास जी ने अपनी पत्नी की बेसरि को रखदिया तो भगवान ऊचे उठ गए बेसरि बाला पल्ला नीचा रह गया पंडा लोग समझ गए ए । सब भगवान की लीला है तब से श्री द्वारिकाधीश डाकौर में निवास करते हैं श्री भरत दास जी श्री द्वारिका धीश के दर्शन किये पास ही । में रामानन्दाचार्य संप्रदा का बहुत बड़ा आश्रम हैं उस में रुके और आस पास सभी आश्रमों के दर्शन किये दूसरे दिन नित्य नियम करने । के बाद भोजन प्रसाद पाने के बाद चलदीए भिर्मण करते हुए श्री नाथ द्वारा आए दर्शन किये उस दिन महोत्सव था 56 प्रकारा का भोग लगा था प्रसाद पाने के लिए मिला फिर आगे चलदीए चितौड़ । गढ़ आए चितौड़ में महा राणा प्रताप का किला बना है पहाढा के उपर श्री मीरा बाई के गिरिधर गोपाल का मंदिर बना है लेकिन उस । में मूर्ति चतुरभुज नाथ की है श्री मीरा बाई के गिरिधर गोपाल को उदयपुर ले गए हैं इसलिए मीरा बाई के गिरिधर गोपाल का दर्शन । नहीं हूआ श्री चतुर भुज नाथ का दर्शन हूआ किला के पास सरोवर में । स्नान कीया नित्य नियम करने के बाद पास में राजस्थान के कुछ भक्त दाल बाटी चूरमा का भंडारा करने आए थे श्री भरत दास जी । को भी बुला कर भोजन प्रसाद पबाया भेंट दछिण दिए उस के बाद श्री भरत दास जी आगे चलदीए कोटा आए कोटा में एक आश्रम में । स्नान तिलक चंदन नित्य नियम कीए भोजन प्रसाद पाने के बाद टिर्नि पकड़ कर झांसी आए एक आश्रम में स्नान ध्यान नित्य नियम करिके भोजन प्रसाद पाने के बाद साम को टिर्नि पकड़ कर चित्रकूट । धाम पहुंचे मंदाकिनी में स्नान कीए और करह आश्रम में पहुंचे उस समय करह आश्रम एक ही था अब तो 7 आश्रम बन गए हैं उस श्री श्री अंनन्त श्री विभूषित श्री राम रत्न दास जी महाराज पटिया बाले । बाबा के शिष्य श्री मौनी जी महाराज निवास करते थे नित्य नियम करिके श्री मौनी जी महाराज को दंडवत कीया ओर श्री मौनी जी । महाराज उपदेश दिया श्री राम जी महाराज के मुखारविंद की बाणी हैं । निर्मल मन जन सो मोहि पावा । मोहि कपट छल छेद्र न भावा । तब प्रसन्न उठता है के निरमल मन कैसे होगा। जनक सुता जग जननी जानकी । अतिसय प्रिय करूना निधन की ।ताके जुग पद कमल मनावउ । जासु कृपा निरमल मति पावउ ।तब श्री मौनी जी महाराज ने बताया के श्री किशोरी जी की दो चौपाई का जाप एक । माला रोज करने से निरमल मति की प्राप्ति होजाती मन भी निरमल। होजाता श्री किशोरी जी की कृपा से भगवान के दर्शन सुलभ हो जाते है जय श्री सीताराम भाग 8

सुबह 9:34